सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-43, अंक-04, कुल पृष्ठ-36, पौष-माघ, विक्रम सम्वत् 2082, जनवरी, 2026

समरसता बढ़ाती भजन प्रतियोगिता

'आरोग्य सेवा सभी के लिए सस्ती और सुलभ होनी चाहिए'

गत दिनों चंद्रपुर, महाराष्ट्र में 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय चंद्रपुर कैंसर अस्पताल' के लोकार्पण समारोह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी ने कहा कि कैंसर या कोई भी बीमारी ज़िंदगी में मुश्किलें खड़ी करती है। हर कोई इस मुश्किल से बाहर निकलना चाहता है। यह किसी एक जगह की समस्या नहीं है। पूरी दुनिया में ऐसी ही तस्वीर दिखती है। शिक्षा और स्वास्थ्य इंसान की दो ज़रूरतें हैं, और ये सभी को, हर जगह मिलनी चाहिए। ये सुविधाएँ लोगों के लिए सस्ती और सुलभ होनी चाहिए। समारोह में टाटा ट्रस्ट बोर्ड ऑफ़ मेंबर्स के चेयरमैन डॉ. कैलाश शर्मा, डॉ. अजय चंदनवाले, पुलिस अधीक्षक सुदर्शन मुम्माका और जिलाधिकारी विनय गौड़ा मंच पर उपस्थित थे।

'पंडित दीनदयाल उपाध्याय चंद्रपुर कैंसर अस्पताल' का लोकार्पण करते श्री मोहनराव भागवत और अन्य अतिथि

सरसंघचालक जी ने कहा कि कैंसर एक ऐसी बीमारी है जो न सिर्फ़ मरीज़ को मारती है, बल्कि पूरे परिवार को भी खत्म कर देती है। एक इंसान को कैंसर होता है और यह पूरे घर को अपने कब्जे में ले लेता है। इलाज के खर्च की चिंता में परिवार वाले थक जाते हैं और निराश हो जाते हैं। इसका मानसिक असर भी बहुत ज़्यादा होता है। इस मामले में, सरकार और टाटा कैंसर इंस्टीट्यूट ने इलाज के लिए जो पहल की है, वह प्रशंसा योग्य है। देश में कम से कम 15 जगहों पर ऐसे अस्पताल बनाए गए हैं। नागपुर में भी एक बड़ा कैंसर अस्पताल है। ऐसे अस्पताल आस-पास के ज़िलों के मरीज़ों के इलाज में मदद करते हैं। लेकिन, मरीज़ हर बार अस्पताल नहीं आ सकता, खर्च नहीं हो पाता, रहने की जगह भी नहीं रहती। इन सब मुश्किलों की वजह से इलाज मिलना कठिन हो जाता है। इन सब परेशानियों को देखते हुए, जगह-जगह सब-सेंटर बनाने का निर्णय किया है, वह मरीज़ों के लिए राहत की बात है। यह आरोग्य सेवा को सब तक पहुंचाने और इसे विकेंद्रीत करने की दिशा में उठाया गया एक प्रभावी कदम है।

उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल चंद्रपुर कैंसर अस्पताल ने इलाज की ज़िम्मेदारी ली है। लेकिन, चंद्रपुर निवासी होने के नाते, यहां के लोगों को भी मरीजों को मानसिक मजबूती देने, उनके परिवार को दिलासा देने और उनके रिश्तेदारों का सहयोग करने की पहल करनी चाहिए। इस प्रकल्प की वजह से चंद्रपुर जिले की ख्याति हर जगह फैलेगी, इसलिए चंद्रपुर निवासियों को भी इस बात का ध्यान रखना होगा कि अस्पताल हर तरह से ठीक चले।

भगवान ने हमें शरीर दिया है। इसका उपयोग सेवा के लिए करना चाहिए। इसमें पैसा नहीं लगता, सिर्फ समय देना होता है। हमें अपनत्व की भावना बढ़ानी पड़ेगी। चिकित्सकों के साथ मरीजों की सेवा करने से परिवार वाले चिंता मुक्त होंगे, मरीज स्वस्थ होंगे और हमें भी संतुष्टि होगी कि जीवन सार्थक है। सरसंघचालक जी ने कहा कि यह गर्व की बात है कि चंद्रपुर में एक आधुनिक कैंसर उपचार केंद्र खोला गया है। मैं भी चंद्रपुर का रहने वाला हूं। जैसे बाहरी गांवों और शहरों में काम करने वाले चंद्रपुर के डॉक्टर इस अस्पताल में काम करके खुश हैं, वैसे ही मैं भी, एक चंद्रपुर निवासी के तौर पर सुविधा निर्माण से प्रसन्न हूं। ❐

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय

सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-43, अंक-04, कुल पृष्ठ-36, जनवरी, 2026

विषय-सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सोमनाथ स्वाभिमान पर्व: अटूट आस्था के 1,000 वर्ष	नरेन्द्र मोदी	4
त्याग और सेवा भारत की मिटी के मूल संस्कार हैं – दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, रा.स्व. संघ	वृन्दा खन्ना	7
नई ऊर्जा के आठ मंत्र	प्रतिनिधि	12
गुरु गोबिंद के बच्चे, उमर में थे अभी कच्चे...	शुकदेव	13
बच्चों पर सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव	आचार्य अनमोल	15
राष्ट्र चेतना का आह्वान	इन्दिरा मोहन	16
एक धार्मिक और आध्यात्मिक पर्व	श्वेत कमल	17
वन्देमातरम मिलकर गाना है	गंगा प्रसाद 'सुमन'	18
आत्म चिंतन	साध्वी सुनंदा (वीणा प्रकाश)	18
संस्कृति और सेवा के साधक	कमलेश त्रिपाठी	19
जानिए आरती के बाद क्यों बोलते हैं कर्पूरगौरं मंत्र	शुकदेव	21
दस कन्याओं के कराए गए सात फेरे	नरेन्द्र आर्य	22
समरसता बढ़ाती भजन प्रतियोगिता	डॉ. संगीता त्यागी एवं ज्योति लहोटी	23
भक्ति, संस्कृति और सहयोग का दिव्य संगम भजन प्रतियोगिता		25
मातृछाया भ्रमण: एक संवेदनशील, भावुक ...	जयती अग्रवाल	27
आपदा प्रबंधन बैठक		28
अन्य समाचार		29

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व: अटूट आस्था के 1,000 वर्ष

■ **नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

सोमनाथ... ये शब्द सुनते ही हमारे मन और हृदय में गर्व और आस्था की भावना भर जाती है। भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात में, प्रभास पाटन नाम की जगह पर स्थित सोमनाथ, भारत की आत्मा का शाश्वत प्रस्तुतिकरण है। द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम में भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों का उल्लेख है। ज्योतिर्लिंगों का वर्णन इस पंक्ति से शुरू होता है...'' सौराष्ट्रे सोमनाथं च...यानि ज्योतिर्लिंगों में सबसे पहले सोमनाथ का उल्लेख आता है। ये इस पवित्र धाम की सभ्यतागत और आध्यात्मिक महत्ता का प्रतीक है।

शास्त्रों में ये भी कहा गया है-

"सोमलिङ्गं नरो दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।
लभते फलं मनोवाञ्छितं मृतः स्वर्गं समाश्रयेत्"

अर्थात्, सोमनाथ शिवलिंग के दर्शन से व्यक्ति अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है। मन में जो भी पुण्य कामनाएं होती हैं, वो पूरी होती हैं और मृत्यु के बाद आत्मा स्वर्ग को प्राप्त होती है।

दुर्भाग्यवश, यही सोमनाथ, जो करोड़ों लोगों की श्रद्धा और प्रार्थनाओं का केंद्र था, विदेशी आक्रमणकारियों का निशाना बना, जिनका उद्देश्य विध्वंस था।

वर्ष 2026 सोमनाथ मंदिर के लिए बहुत महत्व रखता है, क्योंकि इस महान तीर्थ पर हुए पहले आक्रमण के 1,000 वर्ष पूरे हो रहे हैं। जनवरी, 1026 में गजनी के महमूद ने इस मंदिर पर बड़ा आक्रमण किया था, इस मंदिर को ध्वस्त कर दिया था। यह आक्रमण आस्था और सभ्यता के एक महान प्रतीक को नष्ट करने के उद्देश्य से किया गया एक हिंसक और बर्बर प्रयास था।

सोमनाथ हमला मानव इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदियों में शामिल है। फिर भी, एक हजार वर्ष बाद आज भी यह मंदिर पूरे गौरव के साथ खड़ा है। साल 1026 के बाद समय-समय पर इस मंदिर को उसके पूरे वैभव के साथ पुन:निर्मित करने के प्रयास जारी रहे। मंदिर का वर्तमान स्वरूप 1951 में आकार ले सका। संयोग से 2026 का यही वर्ष सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के 75 वर्ष पूरे होने का भी वर्ष है। 11 मई, 1951 को इस मंदिर का पुनर्निर्माण सम्पन्न हुआ था। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की उपस्थिति में हुआ वो समारोह ऐतिहासिक था, जब मंदिर के द्वार दर्शनों के लिए खोले गए थे।

1026 में एक हजार वर्ष पहले सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण, वहां

के लोगों के साथ की गई क्रूरता और विध्वंस का वर्णन अनेक ऐतिहासिक स्रोतों में विस्तार से मिलता है। जब इन्हें पढ़ा जाता है तो हृदय कांप उठता है। हर पंक्ति में क्रूरता के निशान मिलते हैं, ये ऐसा दु:ख है जिसकी पीड़ा इतने समय बाद भी महसूस होती है।

हम कल्पना कर सकते हैं कि इसका उस दौर में भारत पर और लोगों के मनोबल पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा होगा। सोमनाथ मंदिर का आध्यात्मिक महत्व बहुत ज्यादा था। ये बड़ी संख्या में लोगों को अपनी ओर खींचता था। ये एक ऐसे समाज की प्रेरणा था जिसकी आर्थिक क्षमता भी बहुत सशक्त थी। हमारे समुद्री व्यापारी और नाविक इसके वैभव की कथाएं दूर-दूर तक ले जाते थे।

सोमनाथ पर हमले और फिर गुलामी के लंबे कालखंड के बावजूद आज मैं पूरे विश्वास के साथ और गर्व से ये कहना चाहता हूं कि सोमनाथ की गाथा विध्वंस की कहानी नहीं है। ये पिछले 1000 साल से चली आ रही भारत माता की करोड़ों संतानों के स्वाभिमान की गाथा है, ये हम भारत के लोगों की अटूट आस्था की गाथा है।

1026 में शुरू हुई मध्यकालीन बर्बरता ने आगे चलकर दूसरों को भी बार-बार सोमनाथ पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। यह हमारे लोगों और हमारी संस्कृति को गुलाम बनाने का प्रयास था। लेकिन हर बार जब मंदिर पर आक्रमण हुआ, तब हमारे पास ऐसे महान पुरुष और महिलाएं भी थीं जिन्होंने उसकी रक्षा के लिए खड़े होकर सर्वोच्च बलिदान दिया। और हर बार, पीढ़ी दर पीढ़ी, हमारी महान सभ्यता के लोगों ने खुद को संभाला, मंदिर को फिर से खड़ा किया और उसे पुन: जीवंत किया।

महमूद गजनवी लूटकर चला गया, लेकिन सोमनाथ के प्रति हमारी भावना को हमसे छीन नहीं सका। सोमनाथ से जुड़ी हमारी आस्था, हमारा विश्वास और प्रबल हुआ। उसकी आत्मा लाखों श्रद्धालुओं की भीतर सांस लेती रही। साल 1026 के हजार साल बाद आज 2026 में भी सोमनाथ मंदिर दुनिया को संदेश दे रहा है, कि मिटाने की मानसिकता रखने वाले खत्म हो जाते हैं, जबकि सोमनाथ मंदिर आज हमारे विश्वास का मजबूत आधार बनकर खड़ा है। वो आज भी हमारी प्रेरणा का स्रोत है, वो आज भी हमारी शक्ति का पुंज है।

ये हमारा सौभाग्य है कि हमने उस धरती पर जीवन पाया है, जिसने देवी अहिल्याबाई होलकर जैसी महान विभूति को जन्म दिया। उन्होंने ये सुनिश्चित करने का पुण्य प्रयास किया कि श्रद्धालु सोमनाथ में पूजा कर सकें।

1890 के दशक में स्वामी विवेकानंद भी सोमनाथ आए थे, वो अनुभव उन्हें भीतर तक आंदोलित कर गया। 1897 में चेन्नई में दिए गए एक व्याख्यान के दौरान उन्होंने अपनी भावना व्यक्त की। उन्होंने कहा, "दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिर और गुजरात के सोमनाथ जैसे मंदिर आपको ज्ञान के अनगिनत पाठ सिखाएंगे। ये आपको किसी भी संख्या में पढ़ी गई पुस्तकों से अधिक हमारी सभ्यता की गहरी समझ देंगे। इन मंदिरों पर सैकड़ों आक्रमणों के निशान हैं, और सैकड़ों बार इनका पुनर्जागरण हुआ है। ये बार-बार नष्ट किए गए, और हर बार अपने ही खंडहरों से फिर खड़े हुए। पहले की तरह सशक्त। पहले की तरह जीवंत। यही राष्ट्रीय मन है, यही राष्ट्रीय जीवन धारा है। इसका अनुसरण आपको गौरव से भर देता है। इसको छोड़ देने का मतलब है, मृत्यु। इससे अलग हो जाने पर विनाश ही होगा।"

अगर हजार साल पहले खंडित हुआ सोमनाथ मंदिर अपने पूरे वैभव के साथ फिर से खड़ा हो सकता है, तो हम हजार साल पहले का समृद्ध भारत भी बना सकते हैं। आइए, इसी प्रेरणा के साथ हम आगे बढ़ते हैं। एक नए संकल्प के साथ, एक विकसित भारत के निर्माण के लिए। एक ऐसा भारत, जिसका सभ्यतागत ज्ञान हमें विश्व कल्याण के लिए प्रयास करते रहने की प्रेरणा देता है।

ये सर्वविदित है कि आजादी के बाद सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का पवित्र दायित्व सरदार वल्लभभाई पटेल के सक्षम हाथों में आया। उन्होंने आगे बढ़कर इस दायित्व के लिए कदम बढ़ाया। 1947 में दीवाली के समय उनकी सोमनाथ यात्रा हुई। उस यात्रा के अनुभव ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया, उसी समय उन्होंने घोषणा की कि यहीं सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण होगा। अंतत: 11 मई, 1951 को सोमनाथ में भव्य मंदिर के द्वार श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए।

उस अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद

उपस्थित थे। महान सरदार साहब इस ऐतिहासिक दिन को देखने के लिए जीवित नहीं थे, लेकिन उनका सपना राष्ट्र के सामने साकार होकर भव्य रूप में उपस्थित था। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू इस घटना से अधिक उत्साहित नहीं थे। वो नहीं चाहते थे कि माननीय राष्ट्रपति और मंत्री इस समारोह का हिस्सा बनें। उन्होंने कहा कि इस घटना से भारत की छवि खराब होगी। लेकिन राजेंद्र बाबू अडिग रहे, और फिर जो हुआ, उसने एक नया इतिहास रच दिया।

सोमनाथ मंदिर का कोई भी उल्लेख केण्एमण मुंशी जी के योगदानों को याद किए बिना अधूरा है। उन्होंने उस समय सरदार पटेल का प्रभावी रूप से समर्थन किया था। सोमनाथ पर उनका कार्य, विशेष रूप से उनकी पुस्तक 'सोमनाथ, द श्राइन इटरनल', अवश्य पढ़ी जानी चाहिए।

जैसा कि मुंशी जी की पुस्तक के शीर्षक से स्पष्ट होता है, हम एक ऐसी सभ्यता हैं जो आत्मा और विचारों की अमरता में अटूट विश्वास रखती है। हम विश्वास करते हैं- नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। सोमनाथ का भौतिक ढांचा नष्ट हो गया, लेकिन उसकी चेतना अमर रही।

इन्हीं विचारों ने हमें हर कालखंड में, हर परिस्थिति में फिर से उठ खड़े होने, मजबूत बनने और आगे बढ़ने का सामर्थ्य दिया है। इन्हीं मूल्यों और हमारे लोगों के संकल्प की वजह से आज भारत पर दुनिया की नजर है। दुनिया भारत को आशा और विश्वास की दृष्टि से देख रही है। वो हमारे इनोवेटिव युवाओं में निवेश करना चाहती है। हमारी कला, हमारी संस्कृति, हमारा संगीत और हमारे अनेक पर्व आज वैश्विक पहचान बना रहे हैं। योग और आयुर्वेद जैसे विषय पूरी दुनिया में प्रभाव डाल रहे हैं। ये स्वस्थ जीवन को बढ़ावा दे रहे हैं। आज कई वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए दुनिया भारत की ओर देख रही है।

अनादि काल से सोमनाथ जीवन के हर क्षेत्र के लोगों को जोड़ता आया है। सदियों पहले जैन परंपरा के आदरणीय मुनि कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्य यहां आए थे और कहा जाता है कि प्रार्थना के बाद उन्होंने कहा, "भवबीजाङ्कुरजनना रागाद्याः क्षयमुपगता यस्य। अर्थात्, उस परम तत्व को नमन जिसमें सांसारिक बंधनों के बीज नष्ट हो चुके हैं। जिसमें राग और सभी विकार शांत हो गए हैं।

आज भी दादा सोमनाथ के दर्शन से ऐसी ही अनुभूति होती है। मन में एक ठहराव आ जाता है, आत्मा को अंदर तक कुछ स्पर्श करता है, जो अलौकिक है, अव्यक्त है।

1026 के पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष बाद 2026 में भी सोमनाथ का समुद्र उसी तीव्रता से गर्जना करता है और तट को स्पर्श करती लहरें उसकी पूरी गाथा सुनाती हैं। उन लहरों की तरह सोमनाथ बार-बार उठता रहा है।

अतीत के आक्रमणकारी आज समय की धूल बन चुके हैं। उनका नाम अब विनाश के प्रतीक के तौर पर लिया जाता है। इतिहास के पन्नों में वे केवल फुटनोट हैं, जबकि सोमनाथ आज भी अपनी आशा बिखेरता हुआ प्रकाशमान खड़ा है। सोमनाथ हमें ये बताता है कि घृणा और कट्टरता में विनाश की विकृत ताकत हो सकती है, लेकिन आस्था में सृजन की शक्ति होती है। करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए सोमनाथ आज भी आशा का अनंत नाद है। ये विश्वास का वो स्वर है, जो टूटने के बाद भी उठने की प्रेरणा देता है।

अगर हजार साल पहले खंडित हुआ सोमनाथ मंदिर अपने पूरे वैभव के साथ फिर से खड़ा हो सकता है, तो हम हजार साल पहले का समृद्ध भारत भी बना सकते हैं। आइए, इसी प्रेरणा के साथ हम आगे बढ़ते हैं। एक नए संकल्प के साथ, एक विकसित भारत के निर्माण के लिए। एक ऐसा भारत, जिसका सभ्यतागत ज्ञान हमें विश्व कल्याण के लिए प्रयास करते रहने की प्रेरणा देता है। ❐

अतीत के आक्रमणकारी आज समय की धूल बन चुके हैं। उनका नाम अब विनाश के प्रतीक के तौर पर लिया जाता है। इतिहास के पन्नों में वे केवल फुटनोट हैं, जबकि सोमनाथ आज भी अपनी आशा बिखेरता हुआ प्रकाशमान खड़ा है। सोमनाथ हमें ये बताता है कि घृणा और कट्टरता में विनाश की विकृत ताकत हो सकती है, लेकिन आस्था में सृजन की शक्ति होती है। करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए सोमनाथ आज भी आशा का अनंत नाद है।

त्याग और सेवा भारत की मिट्टी के मूल संस्कार हैं
- दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, रा.स्व. संघ

■ वृन्दा खन्ना

भारतीय समाज की सनातन सेवा-परंपरा को समर्पित, संत ईश्वर फाउंडेशन एवं राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित संत ईश्वर सम्मान ने अपने गौरवशाली दस वर्ष की यात्रा पूर्ण करते हुए एक नया इतिहास रच दिया। 5 अक्टूबर 2025 को नई दिल्ली स्थित भारत रत्न सी. सुब्रमण्यम ऑडिटोरियम, पूसा में आयोजित इसके 10वें संस्करण में यह महत्वपूर्ण घोषणा की गई कि संत ईश्वर सम्मान अब सेवा के क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा सम्मान बन चुका है, जिसके अंतर्गत अब प्रतिवर्ष एक करोड़ की सम्मान राशि सेवा-साधकों को प्रदान की जाएगी।

वर्ष 2015 में आरंभ हुआ यह सम्मान आज एक ऐसे राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप ले चुका है, जो नि:स्वार्थ सेवा, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व को केंद्र में रखता है। बीते दस वर्ष में देशभर से 153 समाजसेवियों एवं संस्थाओं को सम्मानित करते हुए 3 करोड़ से अधिक की सहायता राशि प्रदान की जा चुकी है। यह यात्रा उन कर्मयोगियों की है, जिन्होंने दूरस्थ ग्रामों, वनांचलों और समाज के उपेक्षित वर्गों के बीच शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल कल्याण, जनजातीय विकास तथा मानवीय गरिमा के लिए मौन साधना की है।

इस ऐतिहासिक अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में माननीय केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान (ग्रामीण विकास, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय) तथा माननीय केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव (पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) की गरिमामयी उपस्थिति रही। देशभर से आए सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद,

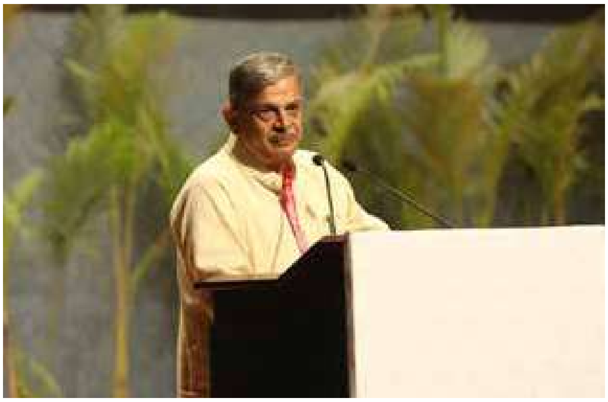

विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारी तथा नागरिक समाज के प्रतिनिधि इस समारोह के साक्षी बने।

कार्यक्रम का शुभारंभ भावनात्मक एवं सशक्त सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से हुआ, जिनमें मल्लखंभ, गणपति वंदना, शिव तांडव, महिला सशक्तिकरण पर आधारित कथक, राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत प्रस्तुतियाँ तथा 'ऑपरेशन सिंदूर' नामक प्रभावशाली नृत्य-नाट्य सम्मिलित रहे। इसी अवसर पर फाउंडेशन की दस वर्ष की प्रेरणादायक यात्रा को समेटती कॉफी टेबल बुक का भी विमोचन किया गया, जो सेवा-साधकों की गाथाओं को स्थायी स्वरूप प्रदान करती है।

फाउंडेशन के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना ने अपने संबोधन में कहा, "दस वर्ष पूर्व यह एक छोटा-सा संकल्प था, उन नि:स्वार्थ समाजसेवियों को सम्मान देने का, जो बिना किसी अपेक्षा के समाज के लिए कार्य करते हैं। आज यह संकल्प एक राष्ट्रीय पहचान बन चुका है। इस वर्ष हमने न केवल सम्मान राशि को ऐतिहासिक रूप से बढ़ाया है, बल्कि पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व को निभाते हुए पॉकेट-साइज निमंत्रण पत्रों के माध्यम से कागज की बचत का संदेश भी दिया है।"

माननीय केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि पिछले दस वर्ष से संत ईश्वर सम्मान जिस निरंतरता और प्रतिबद्धता के साथ कर्मयोगियों को सम्मानित कर रहा है, वह इसे एक स्थायी और सशक्त राष्ट्रीय परंपरा बनाता है। उन्होंने कहा कि स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत का वास्तविक अर्थ तभी साकार होता है, जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति सक्षम बने और करुणा के भाव से एक-दूसरे को आगे बढ़ाए। 'बेहतर भारत का निर्माण' जैसे संदेश तभी सार्थक होते हैं, जब नि:स्वार्थ भाव से अहर्निश सेवा करने वाले साधकों को सम्मान और पहचान मिले। ऐसे सम्मान केवल व्यक्तिगत गौरव नहीं, बल्कि समाज में संवेदना, सहयोग और समरसता को सुदृढ़ करने का माध्यम होते हैं और संत ईश्वर सम्मान इसी दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है।

वहीं श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि भौतिकता की अग्नि में दग्ध विश्व मानवता को यदि शाश्वत शांति का मार्ग कोई दिखा सकता है, तो वह भारत ही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि संत ईश्वर सम्मान जैसे आयोजन केवल सम्मान-समारोह नहीं, बल्कि भारत की सनातन चेतना की अभिव्यक्ति हैं, जहाँ परोपकार को सर्वोच्च धर्म माना गया है। "अपने लिए तो सब जीते हैं," उन्होंने कहा, "पर जो दूसरों के लिए जिए, वही सच्चा जीवन है।" भारतीय दर्शन का स्मरण कराते हुए उन्होंने 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को आज के समय में और अधिक प्रासंगिक बताया तथा स्वामी विवेकानंद के शब्दों को दोहराते हुए कहा कि आज वह क्षण स्पष्ट दिखाई दे रहा है जब भारत माता पुन: अंगड़ाई लेकर खड़ी हो रही है और विश्व-गुरु के आसन की ओर अग्रसर है, जिसका आधार सेवा, त्याग और करुणा हैं।

मुख्य अतिथि सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी ने सेवा को भारतीय जीवन-दर्शन का मूल आधार बताते हुए कहा, "सेवा करने वाले हाथ, प्रार्थना करने वाले हाथों से भी आगे होते हैं। इसीलिए सेवा ही परमो धर्म है।"

उन्होंने कहा कि संत ईश्वर सम्मान पिछले दस वर्ष से समाज के उस कर्तव्य का निर्वहन कर रहा है, जिसके अंतर्गत मौन साधना में लगे कर्मयोगियों को सम्मान और पहचान दी जाती है। रामचरितमानस की पंक्ति- "परहित सरिस ध र्म नहीं भाई" का उल्लेख करते हुए उन्होंने परोपकार को मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा कि जैसे वृक्ष, नदियाँ और गो परोपकार के लिए हैं, वैसे ही यह मानव शरीर भी परोपकार के लिए है। त्याग और सेवा भारत की मिट्टी के मूल संस्कार हैं, और इन्हीं मूल्यों को जीवित रखना भारत को भीतर से सशक्त बनाता है।

इस वर्ष सम्मान तीन प्रमुख श्रेणियों- सेवा सम्मान, विशिष्ट सेवा सम्मान एवं विशेष सेवा सम्मान के अंतर्गत प्रदान किए गए, जिनमें जनजातीय विकास, ग्रामीण विकास, महिला एवं बाल विकास तथा भारतीय विचार पर आधारित विशेष योगदान को सम्मिलित किया गया।

राष्ट्रीय स्तर पर Army Wives Welfare Association

वर्ष से जनजातीय, ग्रामीण और वंचित वर्ग की सेवा कर रहे हैं। नि:शुल्क शिक्षा, संस्कार ओर नशा मुक्ति के माध्यम से इन्होंने 5.000 से अधिक लोगों का जीवन बदला है। समाज सुधार और सांस्कृतिक आयोजनों से बाबा जी ने महाराष्ट्र के आदिवासी समाज में नई दिशा दी है। आज भी वे आश्रमों और विद्यालयों के माध्यम से बच्चों को भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं। साथ ही युवाओं को आत्मनिर्भर और समाज सेवा की राह पर प्रेरित कर रहे हैं।

(AWWA) तथा नेत्र कुंभ 2025 को विशेष सेवा सम्मान प्रदान किया गया, जो क्रमश: सेना परिवारों के सशक्तिकरण और दृष्टि-निवारण के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं।

दस वर्ष की इस ऐतिहासिक यात्रा के साथ, संत ईश्वर सम्मान अब केवल एक पुरस्कार नहीं, बल्कि सेवा-संस्कृति का राष्ट्रीय प्रतीक बन चुका है। प्रतिवर्ष 1 करोड़ की सम्मान राशि के साथ यह पहल आने वाले समय में न केवल सेवा-साधकों को सशक्त करेगी, बल्कि समाज को सेवा, करुणा और मानवता के मूल्यों की ओर और अधिक दृढ़ता से प्रेरित करेगी।

संत ईश्वर सम्मान-2025 : परिचय

जनजाति क्षेत्र

1. गोवर्धन पांडा- कोरापुट, ओडिशा : ओडिशा के कोरापुट जिले में कार्यरत पांडा जी ने आदिवासी समाज के 15,000 से अधिक महिलाओं, पुरुषों और बच्चों के जीवन में आशा की किरण जगाई है। उन्होंने 'दुखुड़ा' समुदाय को सरकारी मान्यता दिलाकर उन्हें योजनाओं का लाभ दिलाने में अहम भूमिका निभाई। साहित्यकार और समाजसेवी के रूप में उन्होंने 'वनवासी ऑफ ओडिशा' जैसी पुस्तकों द्वारा आदिवासी जीवन और संस्कृति को स्वर दिया।

पंडा जी ने पेंशन योजना से लेकर शिक्षा और आजीविका तक हर स्तर पर आदिवासियों को सशक्त किया है। उनकी सांस्कृतिक पत्रिका 'समें' और अन्य प्रकाशनों ने आदिवासी भाषा व परंपरा के संरक्षण में विशेष योगदान दिया है।

2. महामंडलेश्वर रघुनाथ दास जी फरसीवाले बाबा-नासिक, महाराष्ट्र : महाराष्ट्र के नासिक से महामंडलेश्वर रघुनाथ दास जी फरसीवाले बाबा पिछले 30

3. डॉ अम्बेडकर वनवासी कल्याण ट्रस्ट- सूरत, गुजरात : गुजरात के सूरत में कार्यरत डॉ. आंबेडकर वनवासी कल्याण ट्रस्ट ने शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वरोजगार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। यह ट्रस्ट अब तक 3 लाख से अधिक वनवासी भाई-बहनों तक पहुंचा है, 2700 युवाओं को प्रशिक्षण दिया है और कोविड काल में 18.6 लाख लोगों को भोजन उपलब्ध कराया। साथ ही आयुर्वेद, होम्योपैथी, योग और महिला स्वास्थ्य अभियानों के माध्यम से हजारों परिवारों का स्वास्थ्य स्तर बेहतर बनाया है। महिलाओं को सिलाई और स्वरोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने कार्यों से यह ट्रस्ट दक्षिण गुजरात के वनवासी, ग्रामीण और शहरी वर्ग के जीवन में आशा और आत्मनिर्भरता का प्रकाश फैला रहा है।

4. श्री कटुंग वाघे- पूर्वी कामेंग, अरुणाचल प्रदेश: अरुणाचल प्रदेश के इटानगर और पापुमपर जिले से आने वाले श्री कटुंग वाहे दोनी पोलो कल्चरल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। इन्होंने 1800 से अधिक छात्रों को शिक्षा का लाभ पहुंचाया है और जनजातीय संस्कृति, परंपराएं, भाषा व संगीत के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्होंने छलनइन छलअहंउ ल्मंताव नामक विद्यालय की स्थापना की, जहां आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ पारंपरिक मूल्य भी सिखाए जाते हैं। इनके प्रयासों से 30 गांवों के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और समाज में आत्मनिर्भरता का भाव विकसित हुआ है। श्री कटुंग वाहे ने शिक्षा और संस्कृति को जोड़कर आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया है।

ग्रामीण क्षेत्र

1. देविन्द्रप्पा -यादगीर, कर्नाटक : कर्नाटक के दावणगेरे जिले के कुंबलूर गाँव से आने वाले देविन्द्रप्पा जी पिछले एक दशक से देशी धान और जैविक खेती के संरक्षण में कार्यरत हैं। इनके प्रयासों से अब तक 500 से अधिक किसान परिवार लाभान्वित हुए हैं और देशभर के उपभोक्ताओं तक औषधीय व पोषक धान-चावल पहुंच रहा है। गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और उत्तराखंड जैसे राज्यों में इनके द्वारा उगाए गए धान-चावल ने जैविक खेती को नई दिशा और पहचान दी है। इन्होंने 12 से अधिक परंपरागत ध ान की किस्मों को सुरक्षित कर औषधीय गुणों से किसानों और उपभोक्ताओं दोनों को लाभ पहुंचाया है। इनके नवाचारों ने किसानों की आय बढ़ाने और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. ग्रामीण विकास संघम- विजयवाड़ा, आन्ध्र प्रदेश: आन्धप्रदेश के विजयवाड़ा से कार्यरत ग्रामीण विकास संघ पिछले 30 वर्ष से ग्रामीण और जनजातीय समुदायों के सर्वांगींण विकास में कार्यरत है। संगठन ने शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और सतत कृषि के माध्यम से अब तक 20,000 से अधिक लोगों का जीवन बदला है। महिला स्व-सहायता समूहों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों से हजारों महिलाएं आत्मनिर्भर बनी हैं और बच्चों की शिक्षा व पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इनके प्रयासों से सतत कृषि तकनीकों और ग्रामीण आजीविका को नई पहचान मिली है। ग्रामीण विकास संघम ने समाज को आत्मनिर्भर और पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली की ओर अग्रसर करने में सराहनीय भूमिका निभाई है।

3. रेखा प्रभाकर चौहान - संभाजी नगर, महाराष्ट्र : महाराष्ट्र के संभाजीनगर से आने वाली रेखा प्रभाकर चौहान जी ने महिलाओं और युवाओं के सशक्तिकरण के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। उनहोंने सिलाई, कढ़ाई, स्वच्छता, उद्यमिता और वित्तीय साक्षरता का प्रशिक्षण देकर 10,000 से अधिक महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाया है। साथ ही पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और जल संरक्षण अभियानों के माध्यम से समाज को जागरूक किया है। युवाओं में नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना जगाकर उन्हें समाज में नई ऊर्जा और दिशा दी है। उनके कार्यों से न सिर्फ महिलाएं और युवा मजबूत हुए हैं, बल्कि परिवार और समाज भी प्रगतिशील बना है। रेखा जी ने शिक्षा, पर्यावरण और सामाजिक चेतना को जोड़कर समाज में सतत विकास की प्रेरणा दी है।

4. निधि त्रिपाठी -महोबा, उत्तर प्रदेश : उत्तर प्रदेश के महोबा जिले से आने वाली निधि त्रिपाठी जी पिछले 7 वर्ष से जल-संरक्षण और जैविक खेती को बढ़ावा देने में निरंतर कार्यरत हैं। उन्होंने बुंदेलखंड के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में 1100 से अधिक किसान परिवारों को छोटे-छोटे तालाब बनवाने और सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित किया। साथ ही 1200 से अधिक किसानों को आत्मनिर्भर खेती ओर टिकाऊ कृषि के प्रशिक्षण देकर उनकी आय और जीवन स्तर को बेहतर बनाया है। उनके प्रयासों से ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को भी रोजगार, पोषण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में नई दिशा मिली है। निधि जी ने महिला समूहों को स्वरोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाया और समुदाय में सतत विकास की सोच को मजबूती दी है।

महिला एवं बाल विकास क्षेत्र

1. जीवन आनंद संस्थान- औरंगाबाद, महाराष्ट्र : महाराष्ट्र के औरंगाबाद से कार्यरत जीवन आनंद संस्थान पिछले कई वर्षो से वरिष्ठ नागरिकों, मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्तियों और अकेली महिलाओं की सेवा में लगा हुआ है। संस्था अब तक 1150 से अधिक जरूरतमंद लोगों को आश्रय, उपचार, परामर्श, प्रशिक्षण और पुनर्वास की सुविधा प्रदान कर चुकी है। समाज में मानसिक स्वास्थ्य, स्वावलंबन और गरिमामय जीवन के लिए इनके प्रयास सचमुच प्रेरण ादाचयी हैं। संस्था को 'महिला सेवा सम्मान' डमदजंस भ्मंसजी ˆततपवत ,ूतक ˆवबपंस प्उचंबज ,ूतक जैसे कई राष्ट्रीय सम्मान भी मिल चुके हैं, जो इनके उल्लेखनीय कार्य का प्रमाण हैं।

2. चित्रा शाह - करूवदिकुप्पम, पुद्दुचेरी : पुद्दुचेरी की सामाजिक कार्यकर्ता चित्रा शाह जी ने 'सत्य स्पेशल स्कूल' की स्थापना कर दिव्यांग बच्चों और युवाओं के लिए शिक्षा, स्वास्य सेवाएं और पुनर्वास का नया मानक स्थापित किया है। वे अब तक 1400 से अधिक दिव्यांग बच्चों और उनके परिवारों को सीधी मदद पहुंचाकर उन्हें आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन की दिशा में आगे बढ़ा चुकी हैं। उनके प्रयासों से न सिर्फ बच्चों को शिक्षा व उपचार मिला है, बल्कि युवाओं को रोजगार और महिलाओं को प्रशिक्षण भी उपलब्ध करया गया है । उनके

अद्वितीय कार्य को प्दजमतदंजपवदंस ॅवउंद ।ूंतक 2024ए चतपकम व ि चनकनबीमततलए स्पमिजपउम ।बीपमअमउमदज ।ूंतक म्कनबंजपवद बेंतहम उंमत ।ूंतक जैसे राष्ट्रीय और अंतरर्राष्ट्रीय सम्मानों से भी सम्मानित किया गया है।

3. मानव सेवा संस्थान एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर ट्रस्ट–कटिहार, बिहार : बिहार के कटिहार स्थित मानव सेवा संस्थान एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर ट्रस्ट पिछले 10 वर्ष से बेसहारा, अनाथ और वंचित बच्चों के लिए निःशुल्क आवास, भोजन, वस्त्र, स्वास्थ्य सेवाएं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करा रहा है । संस्था अब तक 20,000 से अधिक बच्चों को सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन का अवसर प्रदान कर चुकी है। न सिर्फ शिक्षा, बल्कि व्यावसायिक प्रशिक्षण और जीवन कौशल विकास के माध्यम से यह बच्चों को आत्मनिर्भर बना रही है । इनके कार्य से ग्रामीण और वंचित समाज में नई प्रेरणा और सकारात्मक बदलाव की लहर पहुंची है। संस्था को कई सामाजिक मंचों पर सम्मानित भी किया गया है और इसे शिक्षा व पुनर्वास के क्षेत्र में एक आदर्श मॉडल माना जाता है।

4. पोटुकुची सोमसुंदर सोशल वेलफेयर चेरिटेबल ट्रस्ट – हैदराबाद, तेलंगाना : पोडुकुची सोमसुंदर सोशल वेलफेयर चेरिटेबल ट्रस्ट, मियापुर, हैदराबाद (तेलंगाना) पिछले दो दशक से शिक्षा और रोजगार सशक्तिकरण का कार्य कर रहा है। निःशुल्क शिक्षा, कैरियर मार्गदर्शन और स्किल ट्रेनिंग के माध्यम से यह ट्रस्ट 1100+ स्कूली बच्चों 950+ डिप्लोमा इंनीजियर्स, 150+ ग्रेजुएट इंजीनियर्स और 3000+ युवाओं का जीवन बदल चुका है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने और बाल विवाह रोकने में इनका योगदान सराहनीय है। आज इनके प्रयासों से हजारों बच्चे आत्मनिर्भर बनकर प्दविलेए ।बबमदजनतम ब्चहमउपदपए ज्ब्ै जैसी कम्पनियों में कार्यरत हैं और समाज में प्रेरणा का स्रोत बने हैं।

विशेष योगदान क्षेत्र

1. समर्पण फाउण्डेशन– गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश : समर्पण फाउण्डेशन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) और झारखण्ड के झरिया क्षेत्र में गरीब, असहाय, दिव्यांग और निर्धन वर्ग के लोगों के जीवन सुधार के लिए कार्यरत है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में निरंतर प्रयास करते हुए इसने अब तक लगभग 3 लाख से अधिक लोगों का जीवन स्पर्श किया है। रवि प्रकाश झारखंड के सुदूर इलाकों में व्यक्तिगत स्तर पर पहुंचकर आशा और आत्मविश्वास जगाने का कार्य कर रहे हैं। इनके प्रयासों से समाज में करुणा, सहयोग और सकारात्मक परिवर्तन का वातावरण बना है।

2. मारिंगमेइ गैंगामलुई– इम्फाल, मणिपुर : मणिपुर के रोडमई/काउबुई जनजातीय क्षेत्र से आने वाले मारिंगमेइ गैंगामलुई पिछले 25 वर्ष से जनजातीय परंपरा और संस्कृति के संरक्षण में लगे हुए हैं। उन्होंने पारंपरिक लोकनृत्य और गीतों को नई पीढ़ी तक पहुंचाकर युवाओं में सांस्कृतिक चेतना जगाई है। उनके प्रयासों से लगभग 1.5 लाख लोग अपनी जड़ों से दोबारा जुड़े हैं और 30,000 से अधिक लोग सीधे लाभान्वित हुए हैं। वे जनजातीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान के अग्रदूत बनकर आने वाली पीढ़ियों को पहचान और गर्व का अहसास दिला रहे हैं।

3. मातृछाया ट्रस्ट– पोंडा, गोवा : गोवा के कवले, पोंडा से कार्यरत मातृछाया ट्रस्ट वर्ष 1976 से अनाथ और परित्यक्त बच्चों की माँ बनकर उन्हें सुरक्षित घर, पोषण, शिक्षा और चिकित्सा जैसी सेवाएं दे रहा है। प्रतिवर्ष 150 से अधिक बच्चों को नया जीवन देने वाली यह संस्था अब तक 3000 से अधिक जरूरतमंदों को सीधा सहारा दे चुकी है। साथ ही यह ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी कार्यरत है। मातृछाया ट्रस्ट न केवल बच्चों को आश्रय देता है, बल्कि उन्हें अपनापन और आत्मसम्मान का वातावरण भी प्रदान करता है। यह संस्था राज्य और राष्ट्रीय सतर पर कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी है और समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

4. केशव सेवा धाम दिव्यांग आश्रम– खंडवा, मध्य प्रदेश : मध्य प्रदेश के खंडवा से जुड़े भारत झावर जी, पिछले 30 वर्ष से स्मृति सावित्रीबाई झावर सेवा न्यास के माध्यम से समाज सेवा कर रहे हैं। इन्होंने 650 से अधिक दिव्यांग बच्चों को शिक्षा, उपचार और कौशल प्रशिक्षण उलपब्ध कराकर आत्मनिर्भर बनाया है। इनके प्रयासों से 10,000 से अधिक ग्रामीण बच्चे सरकारी व निजी स्कूलों तक पहुंच सके। भारत झावर जी ने विशेषकर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का उजाला फैलाया है। इनकी प्रेरणा से अनेक बच्चे आज डॉक्टर, इंजीनियर और शिक्षक बनकर समाज की मुख्यधारा से जुड़ चुके हैं। हजारों परिवारों का जीवन बदलने वाले आपके कार्य आज समाज के लिए मिसाल हैं। ❐

नई ऊर्जा के आठ मंत्र

■ प्रतिनिधि

आज हर व्यक्ति के साथ कोई न कोई समस्या रहती है। ऐसे में तनाव रहना आम बात है। इस स्थिति से निकलने के लिए जीवन के आठ मंत्र हैं, जिन्हें अपना कर आप अच्छा जीवन जी सकते हैं।

सही हो जीवनशैली

यह तो आपने भी अक्सर सुना ही होगा कि अगर हम अपने अंदर खुशी नहीं तलाश सकते तो वह हमें कहीं नहीं मिलेगी। खुशी का खजाना हमारे आपके अंदर ही छिपा है, जरूरत है तो बस पहचानकर उसे बाहर निकालने की।

जीवन को सुखी बनाने का सबसे बेहतर तरीका है कि अपनी दिनचर्या निर्धारित करें। इसके लिए जरूरी है कि सुबह समय पर उठें अर्थात जल्दी जग जाएं। इसके बाद कुछ देर पैदल टहलें। साथ ही शरीर के लिए आवश्यक अन्य व्यायाम अवश्य करें, जैसे मेडिटेशन, अनुलोम-विलोम, कपालभांति आदि-आदि। इसके बाद अपनी सुविधानुसार पौष्टिक नाश्ता जरूर करें। यह तो आपको भी पता ही होगा कि छह-सात घंटे के बाद शरीर में ऊर्जा का स्तर बनाए रखने के लिए नाश्ता जरूरी है। अपनी दिनचर्या और जरूरत के हिसाब से लंच करें। बहुत देर तक खाली पेट न रहें। अधिक समय तक खाली पेट रहने से शरीर में विभिन्न प्रकार की समस्याएं पैदा हो सकती हैं। रात में समय से डिनर करें । इस दौरान हल्का और सुपाच्य भोजन लें। रात में अपने सोने का एक निश्चित समय तय करें। ऐसा न हो कि आधुनिकता के फेर में आप देर रात तक उन्हीं में उलझे रहें। ऐसा करने पर आप सुबह समय पर नहीं उठ पाएंगे। नतीजतन आपकी पूरी दिनचर्या प्रभावित हो जाएगी।

बहस से बचना – यह तो आपको भी मालूम ही होगा कि सार्थक बहस करने से एक-दूसरे के विचारों को समझने में आसानी होती है। निरर्थक बहस किसी काम की नहीं होती है। इसलिए निरर्थक बहस से हमेशा बचना चाहिए।

प्रियजनों से मुलाकात – ढेर सारे त्योहार और अन्य अवसर भी शायद इसीलिए बनाए गए, ताकि आप अपने आत्मीय लोगों से मुलाकात कर सकें। याद रखिए जब आप अपने करीबी लोगों से मिलते हैं तो जिंदगी की स्थितियों को अलग तरीके से देखने का नजरिया पैदा होता है। आप अपनी भावनाओं को अपने प्रियजनों से खुलकर व्यक्त कर पाते हैं। लोगों से मिलने-जुलने पर आपके अंदर विषम स्थितियों से भी जूझने का जज्बा पैदा होता है। इस दौरान अपने दिल की बात खोलकर कह पाते हैं और खुलकर हंस पाते हैं।

(शेष पृष्ठ 14 पर...)

गुरु गोबिंद के बच्चे, उमर में थे अभी कच्चे...

■ शुकदेव

कारीगरों ने बालकों को बीच में खड़ा कर दीवार बनानी आरम्भ कर दी। नगरवासी चारों ओर से उमड़ पड़े। काजी पास ही में खड़ा था जिसने एक बार फिर बच्चों को इस्लाम स्वीकार करने को कहा। बालकों ने फिर साहसपूर्ण उत्तर दिया– 'हम इस्लाम स्वीकार नहीं कर सकते। संसार की कोई भी शक्ति हमें अपने धर्म से नहीं डिगा सकती।'

दीवार शीघ्रता से ऊंची होती जा रही थी। नगरवासी नन्हें बालकों की वीरता देखकर आश्चर्य कर रहे थे। धीरे-धीरे दीवार बालकों के कान तक ऊंची हो गयी। बड़े भाई जोरावरसिंह ने अंतिम बार अपने छोटे भाई फतेहसिंह की ओर देखा और उसकी आंखें भर आयीं।

फतेहसिंह भाई की आंखों में आंसू देखकर विचलित हो उठे। 'क्यों वीरजी, आपकी आँखों में ये आंसू? क्या आप बलिदान से डर रहे हैं?' बडे भाई जोरावरसिंह के हृदय में यह वाक्य तीर की तरह लगा।

फिर भी वे खिलखिलाकर हँस दिये और फिर कहा, 'फतेह सिंह तू बहुत भोला है। मौत से मैं नहीं डरता, बल्कि मौत मुझसे डरती है। इसी कारण तो वह पहले तेरी ओर बढ रही है। मुझे दुख केवल इस बात का है कि तू मेरे पश्चात संसार में आया और मुझसे पहले तुझे बलिदान होने का अवसर मिल रहा है। भाई मैं तो अपनी हार पर पछता रहा हूँ।'

बड़े भाई के वीरतापूर्ण वचन सुनकर फतेहसिंह की चिंता जाती रही। जब दीवार गुरु के लाड़लों के घुटनों तक पहुंची तो घुटनों की चपनियों को तेसी से काट दिया गया, ताकि दीवार टेढी न हो जाए। इधर दीवार तेजी से ऊँची होती जा रही थी और उधर सूर्य अस्त होने का समय भी समीप था। राजमिस्त्री जल्दी-जल्दी हाथ चलाने लगे और दोनों बालक आँख मूंदकर अपने आराध्य का स्मरण करने लगे। धीरे-धीरे दीवार बालकों की अपूर्व धर्मनिष्ठा को देखकर अपनी कायरता को कोसने लगी। अंत में दीवार ने उन महान वीर बालकों को अपने भीतर समा लिया।

कुछ समय पश्चात् दीवार गिरा दी गई। दोनों वीर बालक बेहोश हो चुके थे, पर जुल्म की इंतहा तो तब हो गई जब उस अत्याचारी शासन के आदेशानुसार दोनों जल्लादों ने उन बेहोश बालकों के शीश काट कर साहिबजादों को शहीद कर दिया। इतने से भी इन जालिमों का दिल नहीं भरा और लाशों को खेतों में फेंक दिया गया।

छोटे साहिबजादों की शहीदी की खबर सुनकर उनकी दादी स्वर्ग सिधार गईं। जब इस बात की खबर सरहिंद के हिन्दू साहूकार टोडरमल को लगी तो उन्होंने संस्कार करने की सोची।

उसको कहा गया कि जितनी जमीन संस्कार के लिए चाहिए, उतनी जगह पर सोने की मोहरें बिछानी पड़ेंगी और कहते हैं कि टोडरमल जी ने उस जगह पर अपने घर के सब जेवर और सोने की मोहरें बिछा कर साहिबजादों और माता गुजरी का दाह संस्कार किया।

संस्कार वाली जगह पर बहुत ही सुन्दर गुरूद्वारा ज्योति स्वरूप बना हुआ है, जबकि शहादत वाली जगह पर बहुत बड़ा गुरुद्वारा है। छोटे साहिबजादे बाबा फतेह सिंह के नाम पर इस स्थान का नाम फतेहगढ़ साहिब रखा गया, जहाँ हर साल 25 से 27 दिसम्बर तक साहिबजादों की याद में तीन दिवसीय शहीदी जोड़ मेला लगता है, जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं ताकि इस महान शहादत को वो श्रद्धा सुमन अर्पित कर सकें।

जब दोनों बालकों की हत्या हुई तब बालक जोरावरसिंह

की आयु मात्र 7 वर्ष, 11 महीने तथा फतेह सिंह की आयु 5 वर्ष, 10 महीने थी। विश्व के इतिहास में छोटे बालकों की इस प्रकार निर्दयतापूर्वक हत्या की कोई दूसरी मिसाल नहीं है।

दूसरी ओर बालकों द्वारा दिखाया गया अपूर्व साहस संसार के किसी भी देश के इतिहास में नहीं मिलता। धन्य हैं गुरु गोबिंदसिंह, धन्य हैं गुरुगद्दी परम्परा, धन्य हैं माता गुजरी, धन्य हैं गुरु पुत्र और धन्य है हमारी पुण्यधरा। हमारे भीतर भी ऐसी ही धर्म के प्रति निष्ठा व राष्ट्र के प्रति समर्पण हो, तो गौरवशाली भारत निर्माण का स्वप्न दूर नहीं।

इस महान शहादत के बारे में हिन्दी के कवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही लिखा है-

जिस कुल जाति देश के बच्चे भी दे सकते हैं बलिदान,
उसका वर्तमान कुछ भी हो पर भविष्य है सदा महान।

संघ गीत इस बलिदान को समर्पित

कहीं पर्वत झुके भी हैं, कहीं दरिया रुके भी हैं
नहीं रुकती जवानी है, नहीं रुकती रवानी है।
गुरु गोबिंद के बच्चे, उमर में थे अभी कच्चे
मगर थे सिंह के बच्चे, धरम ईमान के सच्चे
गरजकर बोल उठते थे, यूँ सिंह मुख खोल उठते थे
हमारे देश की जय हो, हमारे धर्म की जय हो
पिता दशमेश की जय हो, श्री गुरुग्रन्थ की जय हो।
जोरावर जोर से बोले, फतेह सिंह शोर से बोले
रखो ईंटें और गारे, चुनो दीवार हत्यारे
निकलती साँस बोलेगी, हमारी लाश बोलेगी
यही दीवार बोलेगी, हजारों साल बोलेगी
हमें निज देश प्यारा है, हमें निज धर्म प्यारा है
पिता दशमेश प्यारा है, श्री गुरुग्रंथ प्यारा है

दशम गुरु के लाडले साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फ़तेह सिंह को उनके शहीदी दिवस पर कोटि कोटि नमन एवं विनम्र श्रद्धांजलि। ❐

पेज 12 का शेष...

नई ऊर्जा के आठ मंत्र

समय प्रबंधन- विशेषज्ञों का कहना है कि अगर आपने समय को नियोजित या प्रबंधन करने की कला सीख ली तो आपकी सारी समस्याएं आसानी से हल हो जाएंगी। इसके लिए प्रतिदिन अपने दिनभर के कार्यो की प्राथमिकता के आधार पर सूची बनाएं। फिर इसके हिसाब से कार्य पूरे करते जाएं। इससे न तो आपका कोई काम पेंडिंग रहेगा और न ही एक साथ ढेर सारे काम करने का दबाव रहेगा। अगर आपकी सूची में लिखित कोई काम आपको बहुत मुश्किल लग रहा है तो इसके लिए अपने किसी विश्वनीय व्यक्ति की मदद ले सकते हैं।

मस्ती भी जरूरी है – जिंदगी को सही ढंग से चलाने के लिए जिस प्रकार से आपका रोजाना घर-बाहर के काम करना जरूरी है, ठीक उसी प्रकार से रोजाना कुछ देर मौज-मस्ती भी जरूरी है। इससे काम करने के दौरान जो एकरसता पैदा हो जाती है, उससे निजात मिल जाती है। नतीजतन आपको और अधिक उत्साह से कार्य करने के लिए नई ऊर्जा मिलती है। आप चाहे कामकाजी हों या घर संभालते हों, व्यस्त होने के बाद भी प्रतिदिन अपनी मौज-मस्ती के लिए थोड़ा सा समय अवश्य निकालें। इस दौरान आप अपने मनपसंद कामों को अंजाम दे सकते हैं । मसलन मनपसंद संगीत सुनना, किताबें पढ़ना, डांस करना, कविता-कहानी लिखना। यह सूची आपकी रुचि के अनुसार कुछ भी हो सकती है।

अपनी इच्छाएँ कम करें – किसी ने शायद सही ही कहा है कि आपकी इच्छाएं और अपेक्षाएं जितनी ज्यादा होंगी, आपकी जिंदगी उतनी ही मुश्किल होती जाएगी। इसके विपरीत ये जितनी कम होंगी, आपकी जिंदगी उतनी ही बेहतरीन होगी। अपनी इच्छाओं और लालसा पर जितना अधिक काबू रखेंगे, जिंदगी उतनी ही सुगम होती चली जाएगी।

तनाव का क्या काम – आजकल घर हो या बाहर हर जगह किसी न किसी प्रकार की कुछ न कुछ टेंशन रहती ही है। हेल्थ एक्सपर्ट्स का कहना है कि टेंशन हमारी सेहत के लिए बहुत हानिकारक है। तनाव की वजह से न केवल हमारा ब्लड प्रेशर असंतुलित होता है, बल्कि यह हमारी मानसिक क्षमता पर भी विपरीत असर डालता है।

अतीत को भुला दें – अगर आपके जीवन में कभी कोई अप्रिय घटना घटित हुई है या अतीत की कोई कड़वी याद है तो उसे हर समय अपने कंधे पर लादकर न चलें। अतीत को भुला देना ही श्रेयस्कर रहता है। मनोवैज्ञानिकों का भी कहना है कि अतीत में उतना ही जाएं, जितने से आपको सही प्रेरणा मिले। ❐

बच्चों पर सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव

■ आचार्य अनमोल

यह सर्वथा सत्य है कि आज मानवीय जीवन विज्ञान के सहयोग से ही चल रहा है। यह वक्त की माँग भी है और जरूरी भी है। विज्ञान के बिना भौतिक रूप शून्य माना जा सकता है। वैसे किसी भी अर्थ में विज्ञान का प्रयोग बुरा नहीं कहा जा सकता परंतु एक बहुत पुरानी कहावत है कि अधिकता किसी की भी बुरी होती है। यही बात विज्ञान पर भी लागू होती है। विज्ञान आधारित जितने भी उपकरण हम दैनिक जीवन में किसी भी रूप में प्रयोग करते हैं, सही अर्थों में उनके बिना अब जीवन दुष्कर माना जा सकता है परंतु हमें इन पर इतना भी अधिक निर्भर नहीं होना चाहिए कि ये हमारे जीवन के लिए संकट बन जाएँ।

आगत संकट का उदाहरण स्कूल और कॉलेज में पढ़ने वाले बच्चों के जीवन पर पूरी तरह से पड़ रहा है। यह सत्य है कि व्हाट्सएप का, इंटरनेट का, टीवी का यानी इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया का प्रयोग शोधार्थियों, व्यापारियों, एवं जरूरतमंद लोगों के लिए किसी न किसी रूप में बड़ा सहायक सिद्ध हो रहा है। अध्ययन के लिए, ज्ञानार्जन के लिए, देश और विदेश की जानकारी के लिए और पहुँच से दूर विश्व की किसी भी विषय में झाँकने के लिए इन आधुनिक सभी साधनों का प्रयोग अच्छा कहा जा सकता है परंतु अनावश्यक और अश्लील रूप में इन्हीं सभी चीजों का प्रयोग उनके जीवन को बर्बाद भी कर रहा है।

इन सब बातों के दुष्प्रभाव को समझते हुए अनेक अभिभावक अपने बच्चों के प्रति सचेत हो गए हैं और वे अपने बच्चों द्वारा मोबाइल के अधिक प्रयोग करने से रोकने लगे हैं। अनेक प्रकार की पोर्न वीडियो, अश्लील चित्र, हिंसक वीडियो भ्रमित करने वाले संदेश बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव डालते हैं। इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने भी अनेक चैनलों पर यथासंभव प्रतिबंध भी लगाया है। विगत 10 वर्षों के अंतराल में अनेक ऐसे खेल-खेल में लुभावने वीडियो मोबाइल पर बच्चों के लिए परोसे जा रहे हैं जिससे वे आत्महत्या तक करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

व्हाट्सऐप अथवा मीडिया के इन्हीं दुष्प्रभावों को देखते हुए अभी हाल में ही ऑस्ट्रेलिया सरकार ने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग पर पूरा प्रतिबंध लगा दिया है। बच्चों पर दुष्प्रभाव के मद्दे नजर इंस्टाग्राम,

व्हाट्सऐप अथवा मीडिया के इन्हीं दुष्प्रभावों को देखते हुए अभी हाल में ही ऑस्ट्रेलिया सरकार ने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग पर पूरा प्रतिबंध लगा दिया है। बच्चों पर दुष्प्रभाव के मद्दे नजर इंस्टाग्राम, फेसबुक, यू-ट्यूब, टिकटॉक, स्नैपचैट, थ्रेड्स, एक्स, रेडिट, ट्विच और किक जैसे बड़े प्लेटफॉर्म अब बच्चों को अपनी सेवाएँ नहीं दे पाएँगे।

फेसबुक, यू-ट्यूब, टिकटॉक, स्नैपचैट, थ्रेड्स, एक्स, रेडिट, ट्विच और किक जैसे बड़े प्लेटफॉर्म अब बच्चों को अपनी सेवाएँ नहीं दे पाएँगे। वहाँ की सरकार का कहना है कि यह फैसला बच्चों को हानिकारक अश्लील सामग्रियों, ऑनलाइन फ्रॉड, साइबर बुलिंग और लत लगाने वाले एल्गोरिदम से बचाने के लिए लिया गया है। वास्तव में आस्ट्रेलिया सरकार का यह कदम प्रशंसनीय और स्तुत्य है।भारत सरकार के द्व ारा विस्तृत रूप से इस तरह ही बच्चों की भलाई के लिए अविलंब कदम उठाने चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है कि प्रतिबंधित कंपनियाँ अगर इन विषयों से प्रभावित बच्चों को ब्लॉक करने में नाकाम रहीं, तो उन पर लगभग पाँच करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर तक का भारी जुर्माना लगेगा।

ऑस्ट्रेलिया के इस कदम से स्पष्ट माना जा सकता है कि यह विश्व का पहला देश बन गया है, जिसने बच्चों की भलाई के लिए इतना बड़ा कदम उठाया है।

इस विषय में ऑस्ट्रेलिया सरकार का कहना है कि सोशल मीडिया के एल्गोरिदम बच्चों को देर रात तक स्क्रीन से चिपकाए रखते हैं। सरकार ने यह कदम तब उठाया है जब ऑस्ट्रेलियाई माता-पिता लंबे समय से इसकी शिकायत कर रहे थे कि बच्चे पढ़ाई से दूर हो रहे हैं और कई बार ऑनलाइन बुलिंग या उत्तेजित एवं कामुक करने वाली सामग्री के कारण तनाव झेलते हैं। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने इसे "ऑस्ट्रेलियाई बच्चों के बचपन को सुरक्षित करने" का फैसला बताते है कहा कि अगर बच्चे फोन से हटकर खेलेंगे, पढ़ेंगे और दोस्तों से आमने-सामने मिलेंगे तो उनके जीवन के विकास में अच्छा प्रभाव पड़ेगा। बाद में यही बच्चे समाज में भी सम्मानित जीवन जी पाएँगे।

बच्चों पर दुष्प्रभाव डालने वाले जिन मंचों, व्हाट्सएप ग्रुपों, कंपनियों पर प्रतिबंधित लगाया गया है उनकी सूची अधिक बड़ी है, इसमें अनेक बड़े प्लेटफॉर्म भी शामिल हैं। इन सभी कंपनियों को आदेश दिया गया है कि 16 साल से छोटे बच्चों की पहुँच मीडिया की दुषित सामग्री से पूरी तरह से प्रतिबंधित होनी चाहिए।

पुनः एक बार दोहराया जा सकता है कि ऑस्ट्रेलिया द्वारा बच्चों के जीवन से खिलवाड़ को रोकने के लिए इस उदाहरण को देखते हुए इसी तरह के मीडिया के हर क्षेत्र में प्रतिबंध भारत में भी लगाए जाने चाहिए। इन दूषित मानसिकता वाली कंपनियों के भ्रमजाल के कारण प्रायः भारतीय किशोर अपनी भारतीय संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं और वे पाश्चात्य संस्कृति के पोषक वाली विचारधारा से युक्त सोशल मीडिया की भाषाओं में बने वीडियो के मकड़जाल में फँसते जा रहे हैं। इनमें अधिकतर विषय डब होते हैं और अश्लीलता से भरे होते हैं। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार भारत में वर्ष 2025 में 77 फीसदी जेन-जी ने यू-ट्यूब पर दूसरी भाषाओं से डब किया हुआ उत्तेजित और भ्रम फैलाने वाला कंटेंट देखा है। इससे स्पष्ट है कि इस तरह के वीडियो देखने से बच्चों के मानस-पटल पर बुरा असर पड़ता है और कई बार वे हिंसक वृत्ति वाले, उग्र तथा कुंठित भी हो जाते हैं और आत्महत्या कर लेने पर आमादा तक हो जाते हैं। इसलिए युवाओं की भलाई के लिए जरूरी है कि हमारी भारत सरकार किशोरों की भलाई के लिए ऑस्ट्रेलिया की तरह पूरे देश में बुरा प्रभाव डालने वाली सामग्री के उपयोग करने पर रोक लगा दे। इससे हमारे किशोर व्यर्थ की बातें दिमाग में भरने की जगह पढ़ाई-लिखाई में मन लगाएँगे तो उनका मानसी को सामाजिक विकास अभी को पाएगा। ❒

राष्ट्र चेतना का आह्वान

– इन्दिरा मोहन

शंख बजा है बलिदानों का, निर्माणों का नव परचम।
राष्ट्र चेतना का आह्वान, एक लक्ष्य हो एक कदम।।

ऊँचाई श्रम पर निर्भर है, प्रगति चक्र नित घूम रहा।
समता की हम फसलें रोपें, जन-जन को खुशियां सौपें।।

मातृभूमि के इस मंदिर में, सजे एकता सुन्दरम।
तारीखें युग की बदले हमें, गौरव गरिमा हो अनुपम।

भेदभाव का ताप हरे, अवसर की पहचान करें।।
सामूहिकता हमको प्यारी, उलझन मिल सुलझायें हम।

आँगन में है नव हलचल, उठें, राष्ट्र के युवा सबल।
मान मिले अपमान नहीं, बिका हुआ अनुदान नहीं।।
कालजयी इतिहास हमारा, एक लक्ष्य हो एक कदम।। ❒

एक धार्मिक और आध्यात्मिक पर्व

■ श्वेत कमल

हिंदू धर्म में माघ महीने की अमावस्या तिथि को मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण पर्व है– 'मौन अमावस्या' या 'मुनि अमावस्या', जहाँ भक्त मौन रहकर आत्म-संयम, स्नान (विशेषकर गंगाधपवित्र नदियों में), दान और पितरों के तर्पण के माध्यम से आत्मशुद्धि और मोक्ष प्राप्ति की कामना करते हैं, क्योंकि इस दिन संगम तट पर देवताओं का वास माना जाता है, और यह व्रत भगवान विष्णु और शिव की पूजा के लिए भी विशेष है।

महत्व

1. मौन व्रतः 'मौनी' शब्द 'मुनि' से आया है, इसलिए इस दिन मौन रहकर मनन (आत्म-चिंतन) करने का विधान है, जिससे मानसिक स्थिरता और अंत:करण की शुद्धि होती है।
2. पवित्र स्नानः इस दिन गंगा, यमुना या अन्य पवित्र नदियों में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है, जिससे पाप कर्मों का नाश होता है और देवताओं का आशीर्वाद मिलता है।
3. पितृ पूजा का विशेष विधान पूर्वजों (पितरों) की शांति और आशीर्वाद के लिए तर्पण, पिंडदान और दान करने का विशेष महत्व है, जिससे कुंडली दोष भी शांत होते हैं।

भगवान विष्णु और शिव की पूजा

इस दिन भगवान विष्णु और शिव की आराधना की जाती है, और व्रत रखने से सांसारिक कष्ट दूर होते हैं।

धार्मिक अनुष्ठान

1. सुबह सूर्योदय से पहले उठकर पवित्र नदी में स्नान करना (या घर पर जल में गंगाजल मिलाकर स्नान करना)ण
2. पूरा दिन मौन व्रत का पालन करना,
3. भगवान विष्णु और शिव की पूजा करना। यथायोग्य ध्यान और दान करना।
4. तिल, जल, भोजन आदि का दान करना और पितरों का तर्पण करना।

आज आधुनिकता की अंधी दौड़ में निश्चित तौर पर ऐसे पर्वों के महत्व को नकारा जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम जन-जन तक, विशेष कर युवाओं और छोटे बच्चों तक ये महत्वपूर्ण जानकारियां पहुंचाएं और हमारी अध्यात्मक आस्था से जुड़ी जो अनेकानेक मान्यताएं हैं, जिनका मूलाधार अंततोगत्वा आधुनिक वैज्ञानिक मान्यताओं पर ही आधारित एवं आश्रित है, उनकी जीवंतता चिरस्थाई रहें, सनातनी परम्परागत विधियां वैज्ञानिक तरीकों से उनको समझाया जाए, ताकि आस्थाओं के ये प्रतिबिंबात्मक मानक अपनी संपूर्ण पहचान के साथ बने रह सकें। ❐

गणतंत्र दिवस पर विशेष

वन्देमातरम मिलकर गाना है

– गंगा प्रसाद 'सुमन'

बंकिम का जयघोष गीत, वन्दे मातरम मिलकर गाना है।
आजादी का यह मूल मंत्र था, गौरव आज जगाना है।।

पावन धरती माँ रूपा है ध्यान सुतों का रखती है,
दूर त्रिताप करे, जल, फल, वन, औषधियों से भरती है।
है दुग्ध धवल जलदायिनी, हीरे, मोती स्वर्ण रत्नगर्भा,
तेरी यश गाथा गा-गाकर, नाम तेरा चमकाना है।।

तेरे आँचल में माँ उपकारों के जड़े सितारे हैं,
तेरी चरण-धूलि का तिलक लगा निज दु:ख बिसारे हैं।
तेरी रक्षा में माँ अपना तन-मन-धन अर्पित कर देंगे,
आजादी के परवाने हैं, कीर्ति ध्वज फहराना है।।

वीर शहीदों की गाथाएं, छिपी हुई हैं कण-कण में,
राष्ट्र-गीत का दिव्य उजाला, भरा हुआ है जन-मन में।
वीरों की आशीष, संस्कृति की सुवास, प्राणों में भर,
जाति -धर्म की तोड़ दीवारें, राष्ट्र प्रेम चमकाना है।।

वन्देमातरम् की रक्षा हित, देश प्रेम की ज्योति जली,
कोटि-कोटि आजाद भगत बन चमकी बलिदानी बिजली।
माँ अबला कब, वह तो दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती है रूपा,
शक्ति सम्पदा, ज्ञान उन्हीं से पा उत्कर्ष दिखाना है।।

वन्देमातरम मिला विरासत में, सब मिलकर गाएंगे,
शब्द-शब्द में तीर्थ बसे हैं, झुक-झुक शीश नवाएंगे ।
मातृभूमि का प्यार घनेरा ज्यों वट की शीतल छाया,
माँ की साक्षी में राष्ट्रोन्नति का संकल्प दुहराना है।।

दीवानों ने वन्देमातरम गाया जेलों में हँसते-हँसते,
शहीदों का यह नारा था, फाँसी पर चढ़ते-चढ़ते।
चरणों में झुककर मिलती है दुनियाँ की दौलत अनुपम,
वन्देमातरम् शान हमारी माँ का दूध नहीं लजाना है।। ❐

आत्म चिंतन

■ साध्वी सुनंदा (वीणा प्रकाश)

ईश्वर सर्वव्यापी है। सभी जगह होने पर भी वह किसी को नहीं दिखता। देखा जाता है, तो मंदिरों में, चर्च में और मस्जिदों में। उसके गुण, कर्म, स्वभाव क्या है? यह भी हम जानना नहीं चाहते, जानते हैं, तो मनाना नहीं चाहते, मानते हैं तो करना नहीं चाहते। इसी कारण से हमारी यह दशा हो रही है और हम संकुचित होते चले जा रहे हैं। इसलिए हम सब को, सभी प्राणियों में स्वयं को ही देखें। चाहे वह मनुष्य हो, जल प्राणी हो, पशु-पक्षी इत्यादि कुछ भी हों, सभी के लिए कल्याण की भावना होनी चाहिए जिससे हमें मांस खाने की प्रवृत्ति भी खत्म हो जाएगी। क्योंकि सभी रूपों में हम रह चुके हैं। विश्व में अशांति फैली हुई है, वह भी शांति में बदल जाएगी। हम सभी आर्य हैं और अच्छे कर्म करने वाले ही महापुरुष होते हैं। अगर महापुरुषों के कर्म व सोचो के बारे में जानें, तो हम सब भी महापुरुष बन जाएंगे। यही आर्यत्व की पहचान है। निर्णय आपको ही करना है। ईश्वर एक है, ईश्वर के नाम पर हम सभी बंट रहे हैं। भिन्न-भिन्न समुदाय के अपने भिन्न-भिन्न नियम होते हैं। लेकिन ईश्वर के नियम सभी के लिए एक ही है। इसलिए सनातन धर्म सभी के लिए एक था, एक है और एक ही रहेगा कृपया कोई भी धर्म के नाम पर मत लड़ो प्रेम से रहो। द्वेष भाव हमें प्रेम से दूर करता है, यही सत्य ज्ञान है, बाकी सब आज अज्ञान है। कृपया यह विचार जन जन तक पहुंचें, यही मेरी कामना है। ❐

संस्कृति और सेवा के साधक

■ कमलेश त्रिपाठी

भारत भूमि ने अनेक महान संतों, ऋषियों और विचारकों को जन्म दिया है, जिन्होंने अपने ज्ञान, तपस्या और कर्म से विश्व को दिशा प्रदान की। इन्हीं महापुरुषों में स्वामी विवेकानंद का स्थान अत्यंत उच्च है। वे केवल एक संत या संन्यासी नहीं थे, बल्कि एक महान राष्ट्र निर्माता, समाज सुधारक, दार्शनिक और युवाओं के सशक्त प्रेरणास्रोत थे। उनका संपूर्ण जीवन आत्मविश्वास, सेवा, त्याग और मानवता के मूल्यों पर आधारित था। स्वामी विवेकानंद की जयंती 12 जनवरी को मनाई जाती है। भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में घोषित किया है, ताकि देश के युवा उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त एक प्रतिष्ठित वकील थे, जिनमें तर्कशक्ति और आधुनिक विचारों का प्रभाव था। माता भुवनेश्वरी देवी अत्यंत धार्मिक, संस्कारशील और करुणामयी महिला थीं। माता-पिता के गुणों का प्रभाव नरेंद्रनाथ के व्यक्तित्व पर स्पष्ट दिखाई देता था। पिता से उन्हें तार्किक सोच और साहस मिला, जबकि माता से धार्मिकता, करुणा और नैतिकता के संस्कार प्राप्त हुए।

बचपन और व्यक्तित्व

नरेंद्रनाथ बचपन से ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। वे निर्भीक, उत्साही और सत्य की खोज में लगे रहने वाले बालक थे। उनमें नेतृत्व क्षमता बचपन से ही दिखाई देती थी। वे खेलकूद, संगीत और व्यायाम में भी निपुण थे। उनकी सबसे प्रमुख विशेषता थी- प्रश्न करने की प्रवृत्ति। वे किसी भी बात को बिना तर्क और अनुभव के स्वीकार नहीं करते थे। ईश्वर के अस्तित्व को लेकर उनके मन में गहरी जिज्ञासा थी और वे सच्चे ज्ञान की तलाश में रहते थे।

शिक्षा और बौद्धिक विकास

नरेंद्रनाथ ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता में प्राप्त की। उन्होंने दर्शन, इतिहास, साहित्य, तर्कशास्त्र, वेदांत और पाश्चात्य दर्शन का गहन अध्ययन किया। वे वेदों और उपनिषदों के साथ-साथ पश्चिमी विचारधाराओं से भी भली-भाँति परिचित थे। यही कारण था कि उनके विचारों में भारतीय अध्यात्म और पाश्चात्य वैज्ञानिक सोच का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है।

रामकृष्ण परमहंस से भेंट

ईश्वर की खोज में भटकते हुए नरेंद्रनाथ की भेंट रामकृष्ण परमहंस से हुई। पहली ही मुलाकात में उन्होंने रामकृष्ण परमहंस से पूछा- "क्या आपने ईश्वर को देखा है?" रामकृष्ण परमहंस ने उत्तर दिया- "हाँ, मैं ईश्वर को उसी तरह देखता हूँ, जैसे तुम्हें देख रहा हूँ।" यह उत्तर नरेंद्रनाथ के जीवन का निर्णायक मोड़ बन गया। उन्होंने रामकृष्ण परमहंस को अपना गुरु स्वीकार किया। गुरु के सान्निध्य में उन्हें आत्मज्ञान, भक्ति और सेवा का वास्तविक अर्थ समझ में आया।

संन्यास और विवेकानंद नाम

गुरु रामकृष्ण परमहंस के देहावसान के बाद नरेंद्रनाथ ने संन्यास धारण किया और उनका नाम स्वामी विवेकानंद पड़ा। उन्होंने भारत के विभिन्न भागों की यात्रा की और देश की वास्तविक स्थिति को नज़दीक से देखा। उन्होंने गरीबी, अज्ञान, छुआछूत और सामाजिक असमानता को देखा और यह समझा कि भारत की उन्नति के लिए केवल आध्यात्मिकता ही नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार और शिक्षा भी आवश्यक है।

शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन (1893)

स्वामी विवेकानंद के जीवन की सबसे ऐतिहासिक घटना 1893 का शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन थी। जब उन्होंने मंच से अपने भाषण की शुरुआत "सिस्टर्स एंड ब्रदर्स ऑफ अमेरिका" शब्दों से की, तो पूरा सभागार तालियों से गूँज

उठा। उन्होंने विश्व को बताया कि भारत सहिष्णुता, प्रेम और मानवता की भूमि है। उन्होंने वेदांत दर्शन, सर्वधर्म समभाव और मानव एकता का संदेश दिया। इस भाषण ने भारत को विश्व गुरु की छवि प्रदान की।

भारत और विश्व में प्रभाव

शिकागो सम्मेलन के बाद स्वामी विवेकानंद विश्वभर में प्रसिद्ध हो गए। उन्होंने अमेरिका और यूरोप में वेदांत दर्शन का प्रचार किया और भारत की आध्यात्मिक संस्कृति को वैश्विक पहचान दिलाई। उनके विचारों से पश्चिमी देशों में भी भारतीय दर्शन के प्रति सम्मान बढ़ा।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना

सन् 1897 में स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य था– मानव सेवा, शिक्षा का प्रचार, समाज सुधार, आध्यात्मिक जागरण। उनका प्रसिद्ध कथन– "नर सेवा ही नारायण सेवा है" आज भी समाज सेवा की प्रेरणा देता है।

शिक्षा पर विचार

स्वामी विवेकानंद शिक्षा को चरित्र निर्माण का साधन मानते थे। उनके अनुसार– "शिक्षा वह है जो मनुष्य में निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करे।" वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जो आत्मविश्वास, नैतिकता और आत्मनिर्भरता पैदा करे।

युवाओं के लिए संदेश

स्वामी विवेकानंद युवाओं को राष्ट्र का भविष्य मानते थे। उनके प्रेरक विचार– "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" "खुद पर विश्वास करो।" "शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु है।" ये विचार आज भी युवाओं को कठिन परिस्थितियों में आगे बढ़ने की शक्ति देते हैं।

राष्ट्रीय युवा दिवस का महत्व

स्वामी विवेकानंद की जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने का उद्देश्य युवाओं को उनके आदर्शों से जोड़ना है। इस दिन विद्यालयों और महाविद्यालयों में भाषण, संगोष्ठियाँ, योग, ध्यान और सेवा कार्य आयोजित किए जाते हैं।

उनकी शिक्षाओं की प्रासंगिकता

आज के समय में जब समाज नैतिक संकट, तनाव और भौतिकता से जूझ रहा है, स्वामी विवेकानंद के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। वे हमें आत्मविश्वास, सहिष्णुता और मानवता का मार्ग दिखाते हैं।

उपसंहार

स्वामी विवेकानंद केवल एक संत नहीं, बल्कि एक युगपुरुष थे। उन्होंने भारत को आत्मगौरव, आत्मविश्वास और सेवा का संदेश दिया। उनकी जयंती हमें याद दिलाती है कि यदि युवा शक्ति जागृत हो जाए, तो कोई भी राष्ट्र प्रगति के शिखर पर पहुँच सकता है।

स्वामी विवेकानंद जयंती हमें उनके विचारों को जीवन में अपनाने और एक सशक्त, नैतिक और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का संकल्प लेने की प्रेरणा देती है। ❐

प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

यमुना विहार विभाग में किशोरी विकास की सभी शिक्षिकाओं का एक दिवसीय प्रशिक्षण 28 दिसम्बर, 2025 (रविवार) प्रात: 9.00 बजे सायं 5.00 बजे तक सेवाधाम विद्या मन्दिर मंडोली में रखा गया। विभाग में किशोरी विकास के 25 केन्द्रों का संचालन होता है। प्रशिक्षण वर्ग में कुल 17 शिक्षिकाओं की उपस्थिति रही। शिक्षिकाओं के साथ ही किशोरी विकास का कार्य देख रही चार जिलों में से तीन जिलों की प्रमुख कार्यकर्ता बहिनें भी प्रशिक्षण वर्ग में उपस्थित रहीं। प्रशिक्षण वर्ग में कुल चार सत्र रखे गये थे। पहला सत्र स्वास्थ्य पर था, जिस पर डॉ. रश्मि जी (जिला अध्यक्ष, महिला समित, नंदनगरी) ने विचार रखे। दूसरा सत्र पाठ्यक्रम पर था, जिसे अत्यंत कुशलता से अंजू पांडे जी (प्रांत सामाजिक आयाम प्रमुख) ने रखा। सभी को पाठ्यक्रम के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। तीसरा सत्र हमारी दिनचर्या पर था, जिसको श्रीमती शकुन्तला जी (प्रांत किशोरी विकास प्रमुख) ने लिया। ये विषय कार्यशाला के रूप में रखे गए। सभी बहिनों से दिनचर्या बनवाई गई। अंतिम सत्र खेल का था, जिसको गवेन्द्र पाल जी (विभाग मंत्री) ने लिया। साथ में श्रीमती ऊषा जी (विभाग कार्यवाहिका राष्ट्रीय सेविका समिति) ने भी खेल खिलाए। ❐

जानिए आरती के बाद क्यों बोलते हैं कर्पूरगौरं मंत्र

■ शुकदेव

किसी भी मंदिर में या हमारे घर में जब भी पूजन कर्म होते हैं तो वहां कुछ मंत्रों का जप अनिवार्य रूप से किया जाता है। सभी देवी-देवताओं के मंत्र अलग-अलग हैं, लेकिन जब भी आरती पूर्ण होती है तो यह मंत्र विशेष रूप से बोला जाता है-

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा बसन्तं हृदयारबिन्दे भबं भवानीसहितं नमामि।।

इस मंत्र से शिवजी की स्तुति की जाती है। इसका अर्थ इस प्रकार है-

कर्पूरगौरं- कर्पूर के समान गौर वर्ण वाले। करुणावतारं- करुणा के जो साक्षात् अवतार हैं।

संसारसारं- समस्त सृष्टि के जो सार हैं। भुजगेंद्रहारम्- इस शब्द का अर्थ है जो सांप को हार के रूप में धारण करते हैं। सदा वसतं हृदयाविन्दे भवंभवानी सहितं नमामि- इसका अर्थ है कि जो शिव, पार्वती के साथ सदैव मेरे हृदय में निवास करते हैं, उनको मेरा नमन है।

मंत्र का पूरा अर्थ- जो कर्पूर जैसे गौर वर्ण वाले हैं, करुणा के अवतार हैं, संसार के सार हैं और भुजंगों का हार धारण करते हैं, वे भगवान शिव माता भवानी सहित मेरे हृदय में सदैव निवास करें और उन्हें मेरा नमन है।

यही मंत्र क्यों?

किसी भी देवी-देवता की आरती के बाद कर्पूरगौरम् करुणावतारं....मंत्र ही क्यों बोला जाता है, इसके पीछे बहुत गहरे अर्थ छिपे हुए हैं। भगवान शिव की ये स्तुति शिव-पार्वती विवाह के समय विष्णु द्वारा गाई हुई मानी गई है। अमूमन ये माना जाता है कि शिव श्मशान वासी हैं, उनका स्वरूप बहुत भयंकर और अघोरी वाला है। लेकिन, ये स्तुति बताती है कि उनका स्वरूप बहुत दिव्य है। शिव को सृष्टि का अधिपति माना गया है, वे मृत्युलोक के देवता हैं, उन्हें पशुपतिनाथ भी कहा जाता है। पशुपति का अर्थ है संसार के जितने भी जीव हैं (मनुष्य सहित) उन सब का अधिपति। ये स्तुति इसी कारण से गाई जाती है कि जो इस समस्त संसार का अधिपति है, वो हमारे मन में वास करे। शिव श्मशान वासी हैं, जो मृत्यु के भय को दूर करते हैं। हमारे मन में शिव वास करें, मृत्यु का भय दूर हो। ❐

दस कन्याओं के कराए गए सात फेरे

दिनांक 21 दिसम्बर, 2025, रविवार को श्री राम सत्संग भवन, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा में श्रीराम जानकी विवाह ट्रस्ट द्वारा अभावग्रस्त परिवारों की दस कन्याओं का सामूहिक विवाह सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि यह समिति 1995 से प्रतिवर्ष सामूहिक विवाह का आयोजन सफलतापूर्वक करती आ रही है। इस पावन समारोह का शुभारम्भ श्री स्व. गोपाल कृष्ण अरोड़ा जी ने किया था और अब उनकी सुपुत्री श्रीमती आरती अरोड़ा इस विवाह समिति का कार्य कुशलतापूर्वक संभाल रही है।

समुदाय भवन 'के' ब्लॉक नवीन शाहदरा से 10 बारातों को बाजों के साथ सजे हुए द्वारों से धूम-धाम से लाया जाता है। दूल्हे घोड़ों पर मुकुट पहन कर चलते हैं, उनके आगे-आगे राम-सीता, भरत-माण्डवी, लक्ष्मण-उर्मिला तथा शत्रुघ्न-श्रुतकीर्ति के स्वरूप सुसजित्त रथ में चलते हैं। साथ ही आरती करके फूलों एवं तिलक द्वारा सभी दूल्हों का रास्ते में स्वागत किया गया। सभी बारातें 1:00 बजे श्रीराम सत्संग भवन पहुंचीं। मंच पर भव्य स्वागत के साथ इन जोड़ों ने परस्पर माल्यार्पण किया। फिर समधियों की मिलनी की गई। बाराती घराती जनों की सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गई थी। दर्शकों तथा अतिथियों के लिए प्रसाद (भोजन) की भी अलग व्यवस्था थी। एक कन्या को दिया जाने वाला सामान भी प्रदर्शित किया गया था। भोजन के पश्चात् जोड़ों को एक जैसी सामग्री वितरित की गई। विशिष्ट अतिथि श्री जितेन्द्र महाजन, विधायक रोहतास नगर तथा श्री जयभगवान गोयल इनके साथ श्री अजय शर्मा जी पूर्व निगम पार्षद भी इस विवाह में शामिल हुए। इन सभी ने जोड़ों को आशीर्वाद दिया। समारोह की भव्यता निराली थी। इस कार्यक्रम के सहयोगी सदस्य रहे- श्री अरुण बंसल, श्री अनुपम भटनागर, श्री कैलाश जैन, श्री रघुराज, श्रीमती वीना महतो, श्री राकेश अरोड़ा, श्रीमती कुसुम वशिष्ठ, श्रीमती पूनम भटनागर, श्रीमती रमा अरोड़ा, श्री रमेश गुप्ता, श्रीमती रेणु धीरज आदि।

जनकपुरी में सामूहिक विवाह

गत 6 दिसंबर, 2025 को सनातन धर्म मंदिर जनकपुरी में भारत विकास परिषद एवं सेवा भारती के सहयोग से 10 कन्याओं का विवाह बड़ी धूमधाम से करवाया गया। एक बिटिया दुल्हन, जो डबल स्टोरी, वाल्मीकि कालोनी, तिलक नगर में रहती है, को सेवा भारती ब्यूटीपार्लर केंद्र में योगिता दीदी एवं उनके सहयोगी बहनों ने बहुत सुंदर सजाया, एक दिन पहले मेंहदी भी लगाई गई। मुस्कान दीदी (जेनेस्टी सैलून एंड पार्लर, विकासपुरी), अनुराग जी (बजाज ज्वेलर्स, विकास पुरी), चरणलाल जी (लहंगा सूट साड़ी शॉप, विष्णु गार्डन), श्री अशोक शर्मा (बीजेपी साहिब पुरा), दीपक टेंट हाउस, अनिल रहेजा जी का शादी में सहयोग देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

- नरेंद्र आर्य
अध्यक्ष, सेवा भारती, तिलक जिला

समरसता बढ़ाती भजन प्रतियोगिता

■ डॉ. संगीता त्यागी एवं ज्योति लहोटी

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी यानी 25 दिसम्बर, 2025 को भजन मंडली प्रांत प्रतियोगिता का आयोजन झण्डेवाला माता मन्दिर में हुआ। इसमें उन भजन मण्डलियों ने भाग लिया, जिन्होंने विभाग स्तर की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। दिल्ली सेवा भारती के दो बालिका छात्रावास-माता जीबनी बाई और उपराजिता की भी बच्चियां भी आई और उन्होंने भी प्रतियोगिता में भाग लिया।

इस प्रतियोगिता में बहनों की एक मंडली थी, दूसरी भाइयों की और तीसरी किशोरियों की मंडली थी। दीप प्रज्जवलन दीप मंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। तत्पश्चात् गायत्री मंत्र किया गया। गणेश वन्दना रामकृष्ण पुरम विभाग की मण्डली ने प्रस्तुत की। सबसे पहले बहनों की (आठों विभाग से आई) प्रतियोगिता हुई, फिर किशोरियों की और अन्त में भाइयों की प्रतियोगिता रही। कुल मण्डली 19 रही।

दिल्ली प्रान्त में कुल 145 भजन मण्डलियां हैं, जो कि साप्ताहिक या मासिक केन्द्रों पर भजन कीर्तन करती हैं और बस्ती में लोगों को धर्म से जोड़ने का कार्य करती हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए एक मण्डली में अपेक्षित संख्या 10 रखी गई। इस प्रकार प्रांत में 19 मण्डलियों में

बहन प्रतियोगिता में प्रथम - झण्डेवाला विभाग, मुखर्जी नगर जिला की मण्डली रही।
द्वितीय स्थान रहा - केशव पुरम विभाग, सरस्वती विहार जिला।
किशोर प्रतियोगिता में - प्रथम- केशव पुरम विभाग, तिलक जिला की मण्डली।
द्वितीय स्थान रहा - झण्डेवाला विभाग, कमला नगर जिला की मण्डली।
भाइयों की प्रतियोगिता में - प्रथम - पूर्वी विभाग- शाहदरा जिला की मण्डली।
द्वितीय स्थान रहा - यमुना विहार विभाग - करावल नगर जिला की मण्डली।

संख्या 190 रही। कार्यकर्ता भाई-बहन, निरीक्षिका बहनें कुल संख्या 410 रही। सभी के लिए भोजन प्रसाद की व्यवस्था रही।

मुख्य अतिथि श्रीमती बबीता गोयल, यूफी इलेक्ट्रिक इण्डिया प्रा. लि. की डायरेक्टर रहीं। विशिष्ट अतिथि श्रीमती

सुनीला सप्रा (जौली जी) एवं श्रीमती डॉ. सांल्वना श्रीकान्त रहीं। जौली जी ने भी एक भजन गाकर भजन मण्डलियों का उत्साहवर्धन किया।

निर्णायक मण्डल में डॉ. जगबन्धु प्रसाद (सह-प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय), श्री मोहित डोभाल(अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार एवं संगीत शिक्षाविद्), डॉ. राजनीश कुमार गुप्ता (दिल्ली पब्लिक स्कूल, रोहिणी), श्रीमती पद्मा एस कुमार (यू ट्यूबर संगीत में पोस्टग्रेजुएट) रहीं।

निर्णायकों ने सभी भजन मण्डलियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और भविष्य में जब भी जरूरत हो अभ्यास कराने की या सिखाने की पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

संगीता जी, प्रांत मंत्री ने सेवा भारती की भजन मण्डली होने के नाते उनसे क्या-2 अपेक्षायें हैं पर अपनी बात रखी। भजन सामूहिक गायन के लाभ भी बताये व्यक्तिगत और समाज के लिए। प्रथम, द्वितीय रही मण्डलियों को प्रमाणपत्र, प्रतीक चिह्न एवं उपहार प्रदान किए गये। अन्य सभी प्रतिभागियों को भी उपहार दिए गये। झण्डेवाला माता मन्दिर का भरपूर सहयोग मिला। छात्रावास की बेटियों को भी उपहार दिया गया। कल्याण मंत्र से भजन मंडली का समापन हुआ। ❒

भक्ति, संस्कृति और सहयोग का दिव्य संगम
भजन प्रतियोगिता

मियांवाली नगर

सेवा भारती द्वारा 12 दिसंबर, 2025 को सनातन धर्म मन्दिर, मियांवाली नगर, नई दिल्ली में भजन प्रतियोगिता का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया। इस पावन अवसर पर जिला नांगलोई भजन मंडली ने अत्यंत उत्साह, श्रद्धा एवं समर्पण भाव से सहभागिता कर कार्यक्रम की शोभा में चार चाँद लगा दिए। प्रतियोगिता में सम्मिलित सभी भजन मंडलियों ने अपनी भावपूर्ण एवं मधुर प्रस्तुतियों से सम्पूर्ण वातावरण को भक्तिरस से सराबोर कर दिया।

कार्यक्रम के समापन पर सभी प्रतिभागियों को उपहार भेंट किए गए तथा विजेता मंडलियों को विशेष सम्मान से अलंकृत किया गया। सभी उपस्थितजनों के लिए अल्पाहार की उत्तम व्यवस्था भी की गई। यह आयोजन भक्ति, संस्कृति और सामूहिक सहभागिता का एक सुंदर और प्रेरणादायक उदाहरण रहा।

शंकर विहार

सेवा भारती पूर्वी विभाग में जिलानुसार हुई भजन प्रतियोगिता में प्रथम और द्वितीय आई मण्डलियों की प्रतियोगिता 4 दिसम्बर को हनुमान मन्दिर, काफी होम के सामने,शंकर विहार में आयोजित किया गया। कुल मिलाकर 10 मण्डलियों ने भाग लिया। चारों जिलों की 8 और एक-एक किशोर और किशोरियों की मण्डली बुलाई गई। सभी मण्डलियों का बहुत ही उत्तम प्रदर्शन रहा। पर भजन प्रतियोगिता के दिये

गए निर्देशों के अनुसार प्रतियोगिता में मयूर विहार जिले की मण्डली का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। गांधीनगर जिला द्वितीय और इन्द्रप्रस्थ जिला तृतीय स्थान पर रहा। मन्दिर प्रांगण में पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। आमन्त्रित गणमान्य जजों ने सभी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। माननीय जज का अति मधुर भजन, जो बिना साज के गाया, प्रशंसनीय रहा। साक्षी ध्यान बखूबी सिखाया। अन्त में सभी मण्डलियों को समान उपहार और चाय, नाश्ता देकर विदा किया गया।

दक्षिणी विभाग

सेवा भारती दक्षिणी विभाग में भजन प्रतियोगिता 14 दिसंबर को सर्वोदय एनक्लेव, शिव मंदिर में संपन्न हुई। इसमें प्रथम विजेता दक्षिणी विभाग से बदरपुर जिला के गार्गी सेवा केंद्र की बहनें रहीं।

रामकृष्णपुरम विभाग

रामकृष्णपुरम विभाग में विभाग स्तर की भजन प्रतियोगिता हुई। इसमें सभी जिलों से मण्डली ने भाग लिया। भांति-भांति प्रकार से धार्मिक भजन से वातावरण को आनन्दमय किया। विजेता टीम को पारितोषिक देकर उत्साहवर्धन किया गया।

पश्चिम विभाग

गत 20 दिसम्बर 2025 को सेवा भारती, पश्चिम विभाग द्वारा आयोजित वार्षिक भजन मंडली प्रतियोगिता का भव्य आयोजन सनातन धर्म मंदिर, मियांवाली नगर में अत्यंत श्रद्धा और उल्लासपूर्ण वातावरण में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना व दीप प्रज्वलन से हुआ। आरंभिक प्रस्तुति में अर्णव एवं आर्यन (कक्षा 7) द्वारा प्रस्तुत लव-कुश राम कथा ने पूरे वातावरण को भक्ति रस से सराबोर कर दिया। मुख्य अतिथि डॉ. राजवीर सोलंकी, पूर्व वाइस चांसलर एवं चेयरपर्सन, प्रोफेसर ग्लोबल स्कूल, ने अपने आशीर्वचन में कहा, 'भक्ति और संगीत किसी भी समाज की सांस्कृतिक शक्ति को जीवंत बनाए रखते हैं।' कार्यक्रम में अनेक गणमान्य

व्यक्तियों एवं सम्मानित अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी भजन मंडलियों की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने दर्शकों के हृदय को छू लिया। किशोरियों ने भी अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से विशेष प्रशंसा प्राप्त की। कार्यक्रम का संचालन सुव्यवस्थित ढंग से हुआ तथा अंत में श्री सुरेश सिंघल, उपाध्यक्ष, सेवा भारती पश्चिम विभाग की अध्यक्षता में प्रतियोगिता का समापन हुआ। सेवा भारती, पश्चिम विभाग की ओर से सभी प्रतिभागियों को स्मृति उपहार प्रदान किए गए और सभी के लिए भोजन प्रसाद की श्रेष्ठ व्यवस्था की गई। यह आयोजन केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि भक्ति, संगीत और संस्कृति का मधुर संगम सिद्ध हुआ।

केशवपुरम विभाग

गत 13 दिसंबर, 2025 को केशव पुरम विभाग में विभाग स्तर पर भजन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें चारों जिलों से 8 महिलाओं की मंडली 4 किशोरियों की मंडली

ने भाग लिया। महिलाओं की मंडली में प्रथम स्थान पर सरस्वती जिले की श्रीमती पुष्पा देवी (के ब्लॉक शकूरपुर आनन्दवास केंद्र) और द्वितीय स्थान पर जे ब्लॉक शकूरपुर आनन्दवास केंद्र की मंडली रही। इस भजन प्रतियोगिता में 4 निर्णायक- मनोरमा मिश्रा, रेणु मनोचा, अंजु शर्मा और पुष्पा गुप्ता रहीं। ❐

मातृछाया भ्रमण : एक संवेदनशील, भावुक और प्रेरणादायक अनुभव

■ जयती अग्रवाल

मातृछाया वह स्थान है, जहाँ बच्चे जीवन की विभिन्न पीड़ाओं से गुजरकर पहुँचते हैं और जहाँ से उन्हें स्नेह, सुरक्षा और संस्कारों से भरे अच्छे परिवारों में गोद लेने की नई आशा मिलती है। यह केवल एक संस्था नहीं, बल्कि टूटे हुए बचपन को संवारने वाला एक सजीव परिवार है।

Women for Bharat (WFB) द्वारा 19 दिसंबर को आयोजित मातृछाया का यह भ्रमण हम सभी के लिए केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि हृदय को गहराई तक छू लेने वाला अनुभव बन गया। इस सेवा यात्रा में 20 से अधिक बहनें सहभागी रहीं। जैसे ही हम मातृछाया पहुँचे, वहाँ का वातावरण-शांत, स्नेहपूर्ण और अपनत्व से भरा-मन को स्वतः ही बाँध लेने वाला था।

जब हमने बच्चों से बातचीत की, उनके सिर पर स्नेह से हाथ रखा और उनकी मुस्कान देखी, तो कई बहनें भीतर तक भावविभोर हो उठीं। बच्चों का निश्छल प्रेम और अपनापन देखकर कई महिलाओं की आँखें नम हो गईं। एक बहन ने भावुक होकर कहा-

"आज पहली बार समझ आया कि सेवा सिर्फ देना नहीं होती, कई बार वो हमें भीतर से जोड़ देती है।"

बच्चों के चेहरों पर जो संतोष और सुकून था, उसने सभी के हृदय को छू लिया। एक अन्य बहन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा-

"मातृछाया में बच्चों के चेहरे पर जो सुकून दिखा, उसने मेरे दिल को छू लिया। लगा जैसे ये जगह सिर्फ आश्रम नहीं, सच में घर है।"

इन शब्दों में वहाँ के वातावरण की सच्ची अनुभूति झलक रही थी-जहाँ बच्चों को केवल आश्रय नहीं, बल्कि परिवार जैसा स्नेह और सुरक्षा मिलती है।

इसके पश्चात हमने प्रसन्न सलाह केंद्र का अवलोकन किया, जहाँ पारिवारिक विवादों और आपसी मतभेदों को संवाद, समझ और संवेदनशीलता के माध्यम से सुलझाया जाता है। यह जानकर मन को गहरा संतोष हुआ कि कई टूटते रिश्तों को यहाँ नई आशा और दिशा मिलती है।

इसके बाद बाल वाटिका में श्रमिक वर्ग के बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, संस्कृति और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते हुए देखकर सभी बहनें अत्यंत प्रभावित हुईं। छोटी उम्र में ही बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण समाज के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव है-यह बात वहाँ स्पष्ट रूप से अनुभव हुई।

यह संपूर्ण भ्रमण हम सभी के लिए केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि सेवा, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व को आत्मसात करने का एक गहरा अनुभव था। मातृछाया में हो रहा यह निःस्वार्थ सेवा कार्य ॅवउमद वित ठींतंज की प्रत्येक बहन के हृदय में यह संकल्प छोड़ गया कि सच्ची राष्ट्रसेवा वहीं से शुरू होती है, जहाँ करुणा और अपनत्व हो। ❐

आपदा प्रबंधन बैठक

सेवा भारती आपदा प्रबंधन की बैठक 20 दिसंबर, 2025 को सेवा भारती कार्यालय 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली में हुई। इसमें डॉ. संजय जिंदल जी (प्रमुख, आपदा प्रबंधन, दिल्ली), श्री कौशल जी (सह-प्रमुख, आपदा प्रबंधन, दिल्ली), श्री सुरेश सोलंकी जी (करोल बाग जिला, झंडेवालान विभाग), सुश्री ज्योत्सना जी (सदस्य), श्री सुधेंद्र त्रिपाठी जी (सदस्य), श्री मोहित शर्मा जी (सदस्य), श्री नवनीत जोशी जी (सदस्य),श्री संदीप नैन जी (सदस्य), श्रीमती माया शर्मा जी (सदस्य), श्रीमती हेमा जी (सदस्य) और श्री सूर्य जी (सदस्य) उपस्थित रहे। बैठक का शुभारंभ गायत्री मंत्र के साथ प्रातः 11:00 बजे हुआ। सेवा भारती, दिल्ली के आपदा प्रबंधन कार्यों के मार्गदर्शन हेतु पधारे डॉ. संजय जिंदल जी एवं श्री कौशल जी का परिचय हुआ।

बैठक में स्वयंसेवकों की जैकेट, स्वयंसेवकों हेतु आवश्यक उपकरण, प्राथमिक उपचार (First Aid) बॉक्स एवं बैग का मानकीकरण, प्रशिक्षण एवं संचालन मैनुअल की रूपरेखा, भविष्य की बैठकों की समय-सारिणी एवं प्रारूप और स्वयंसेवक योगदान एवं उपस्थिति प्रणाली आदि पर चर्चा हुई।

बैठक में सामूहिक रूप से यह निर्णय लिया गया कि सभी स्वयंसेवकों को सेवा भारती के लोगो वाली जैकेट प्रदान की जाएगी। जैकेट के आगे सेवा भारती का लोगो होगा। लोगो रेडियम सामग्री से निर्मित होगा। रंग सफेद रहेगा, जिससे दिन एवं रात दोनों समय स्पष्ट पहचान सुनिश्चित हो सके। स्वयंसेवकों हेतु आवश्यक उपकरणों का निर्धारण भी हुआ। यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक स्वयंसेवक के मानक किट में निम्नलिखित उपकरण सम्मिलित किए जाएंगे- टॉर्च, सीटी, पट्टी (Bandage), टेस्टर (इलेक्ट्रिकलधमल्टी-परपज़), मास्क, दस्ताने, कैंची, मल्टी-एप्लिकेशन टूल, नोटपैड एवं पेन और रस्सी।

दो प्रकार की प्राथमिक उपचार किट रखने पर विचार किया गया- छोटा प्राथमिक उपचार बॉक्स, कारों में उपलब्ध मानक फर्स्ट-एड बॉक्स के समान हल्का एवं आसानी से ले जाने योग्य।

स्वयंसेवक बैग: उपरोक्त सभी उपकरणों एवं प्राथमिक उपचार सामग्री सहित प्रत्येक स्वयंसेवक को यह बैग प्रदान किया जाएगा।

प्रशिक्षण एवं संचालन मैनुअल की रूपरेखा: स्वयंसेवकों के लिए एक विस्तृत प्रशिक्षण एवं संचालन मैनुअल तैयार किया जाएगा, जो कार्यों का रोडमैप होगा।

मैनुअल में शामिल विषय – अनुक्रमणिका (Index),

जोखिम प्रबंधन प्रोटोकॉल, मानक संचालन प्रक्रिया (SOPs), आपदा से पहले, दौरान एवं बाद के स्वयंसेवकों लिए दिशा-निर्देश, केंद्र एवं दिल्ली की समन्वय एजेंसियों की सूची, आपातकालीन संपर्क नंबर, दिल्ली के उच्च एवं मध्यम जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान, दिल्ली के भौगोलिक क्षेत्रों का वितरण (ज़ोनवार जिम्मेदारी), दिल्ली में हुई पूर्व आपदाओं का इतिहास (केस स्टडी/सीख), ब्लड बैंक, एम्बुलेंस सेवाओं एवं अस्पतालों की निर्देशिका स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यक्रम: स्वयंसेवकों के लिए एक संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया जाएगा।

मुख्य बिंदु: उपकरणों का व्यावहारिक प्रशिक्षण, बेसिक टेस्टिंग एवं CPR प्रशिक्षण, प्रशिक्षण पूर्णत: नि:शुल्क रहेगा, 3Ts (Training, Tools and Test) प्रशिक्षण हेतु सहयोगी संस्था: प्रशिक्षण हेतु महाराजा अग्रसेन अस्पताल के साथ सहयोग की संभावनाएँ तलाशी जाएंगी।

प्रमाण-पत्र: प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर स्वयंसेवकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा।

भविष्य की बैठकों की समय-सारिणी एवं प्रारूप: नियमित समन्वय हेतु निम्न व्यवस्था तय की गई।

भौतिक बैठक : प्रत्येक माह के दूसरे शनिवार, प्रात: 11:00 बजे (स्थान परिवर्तनीय रहेगा)।

ऑनलाइन बैठक: प्रत्येक माह के चौथे शनिवार। स्वयंसेवक योगदान एवं उपस्थिति प्रणाली। स्वयंसेवकों द्वारा नियमित रूप से 'सेवा समर्पण' पत्रिका हेतु योगदान। स्वयंसेवक किट, उपकरण एवं आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था हेतु एक स्थायी कोष की स्थापना।

प्रारंभिक लक्ष्य: कम से कम 1,00,000 (एक लाख रुपये) एकत्रित करना।

उपस्थिति व्यवस्था: सभी बैठकों एवं प्रशिक्षण सत्रों के लिए अलग उपस्थिति रजिस्टर रखा जाएगा। बैठक 12:30 बजे कल्याण मंत्र और मौजूद सभी सदस्यों को धन्यवाद के साथ खत्म हुई। मौजूद सभी सदस्यों ने अपना नाम, हस्ताक्षर और फ़ोन नंबर लिखकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

टिप्पणी : अगली बैठक 10 जनवरी, 2026 को सुबह 11.00 बजे होने की को होनी निश्चित हुई है। बैठक की जगह के बारे में जल्द ही बताया जाएगा। ❐

सुदामा पुरी में वार्षिकोत्सव एवं तुलसी पूजन के कार्यक्रम

गत 25 दिसंबर, 2025 को माधव सेवा केंद्र सुदामा पुरी केंद्र का वार्षिकोत्सव एवं तुलसी पूजन दिवस कार्यक्रम वाल्मीकि वाटिका वाल्मीकि बस्ती सुदामा पुरी में आयोजित हुआ। सर्वप्रथम बस्ती की महिलाओं ने तुलसी जी का पूजन किया तथा तुलसी जी के भजन भी गाए। माधव सेवा केंद्र सुदामा पुरी के सेवित जनों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करके कार्यक्रम के वातावरण को गरिमामय बना दिया। इसमें पर्यावरण के विषय को नाटक के माध्यम से बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया जो संघ के पंच परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। यमुना विहार की महिला कार्य प्रमुख बहन बीना महतो जी ने तर्कपूर्ण ढंग से महिला कार्यो की जानकारी दी तथा उन्हें सेवा भारती से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रघुराज जी ने सेवा भारती के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। अंत में कल्याण मंत्र से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री भगवंत कुमार (प्रधान वाल्मीकि समाज), यमुना विहार विभाग संगठन मंत्री श्री मानवेन्द्र जी, विभाग महिला कार्य प्रमुख बहन बीना महतो जी, अध्यक्ष चरक ;षि सेवा केंद्र श्री रघुराज जी, जिला रोहतास नगर महिला समिति अध्यक्षा बहन रितु जी, जिला रोहतास नगर जिला अध्यक्ष श्री रामप्रकाश गोस्वामी जी एवं जिला रोहतास नगर मंत्री श्री राजेंद्र कुमार उपस्थित रहे। ❐

कार्यकर्ताओं ने किए शिव मंदिर में दर्शन

पिलखुवा में टेक्सटाइल सिटी के नजदीक और कसबे से मात्र ढाई किलोमीटर दूर गांव दहपा में प्राचीन शिव मंदिर है। भक्तों का दावा है कि यहां जो भी भक्त सच्चे मन से भगवान भोले शंकर से कुछ मांगता है उसकी मन्नत पूर्ण जरूर होती है। इसे देखते हुए पिछले दिनों शाहदरा जिले की समस्त कार्यकारिणी व सभी शिक्षिकाएं दहपा स्थित प्राचीन शिव मंदिर के दर्शन के लिए गए! शाहदरा जिले के अध्यक्ष श्री शुकदेव के माध्यम से वहां भोजन प्रसाद व चाय की व्यवस्था रही। मंदिर दर्शन से सभी बहुत खुश हुए। सबने इस यात्रा का आनंद लिया। ❐

वीर बालक शहीदी दिवस पर विशेष कार्यक्रम

गत 25 दिसंबर, 2025 को डॉ. हेडगेवार भवन, कैलाश नगर में वीर बालक शहीदी दिवस पर सेवितजनों को स्मार्ट क्लास पर साहबजादों की वीरता और शहीदी पर फिल्म दिखाकर प्रश्नोत्तरी रखी गई और तुलसी पूजन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री वर्धमान जैन और श्री महेंद्र अग्रवाल ने सभी सेवितजनों में स्टेशनरी और बिस्कुट का वितरण किया। जिले से जिला मंत्री पंकज जी, कोषाध्यक्ष परमेश्वर जी और बहन समिति मंत्री तपस्या जी, निरीक्षका और शिक्षिका उपस्थित रहीं। ❐

श्रीराम मंदिर सेवा केंद्र

गत 25 दिसंबर, 2025 को श्री राम मंदिर सेवा केंद्र का वार्षिकोत्सव एवं तुलसी पूजन दिवस रविदास बस्ती वेलकम कॉलोनी के रविदास मंदिर में आयोजित हुआ। सर्वप्रथम तुलसी जी का पूजन बस्ती की महिलाओं ने किया। राम मंदिर सेवा केंद्र के बच्चों ने गायत्री मंत्र का उच्चारण भावपूर्ण तरीके से किया तथा नाटिका के माध्यम से पानी के दुरुपयोग के बारे में सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सोनी प्रधान (वाल्मीकि समाज), श्री शिवचरण जी एवं श्री राजेंद्र जी (प्रमुख रविदास समाज) उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि श्री सोनी प्रधान ने सेवा भारती के कार्यों की सराहना की और उन्हें समाज के लिए उपयोगी बताया। तत्पश्चात दिल्ली प्रांत सह संगठन मंत्री श्री सुनील जी ने सेवा भारती के कार्यों के बारे में विस्तार से बताया तथा सेवा भारती से जुड़ने का आग्रह भी किया, ताकि हम अपने कार्य का विस्तार करके समाज के लिए और अधिक सेवा कर सकें। कार्यक्रम का समापन कल्याण मंत्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम में यमुना विहार विभाग संगठन मंत्री श्री मानवेन्द्र, जिला रोहतास नगर जिला महिला मंत्री बहन ललिता जी, जिला रोहतास नगर अध्यक्ष श्री रामप्रकाश गोस्वामी एवं जिला रोहतास नगर मंत्री श्री राजेंद्र कुमार उपस्थित रहे। ❐

गोपालधाम छात्रावास का दूसरा वार्षिकोत्सव

■ रामसेवक, विभाग मंत्री

गत 14 दिसंबर, 2025 को केशवपुरम विभाग में स्थित गोपालधाम छात्रावास का दूसरा वार्षिकोत्सव समारोह श्रीराम मंदिर, रघुबीर नगर में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री नीरज गुप्ता (सूर्या साड़ी वाले) द्वारा की गई। समारोह की शुरुआत केशव पुरम विभाग के माननीय अध्यक्ष श्री मुकेश गोयल, विशिष्ट अतिथि श्री मनुज सेठ (प्रसिद्ध उद्योगपति), श्री राज जैन, सेवा भारती केशवपुर विभाग एवं सेवा भारती प्रांत उपाध्यक्ष श्री वरदान अग्रवाल एवं संगठन मंत्री श्री शुकदेव द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ की गई। बच्चों द्वारा दीप प्रज्वलन मंत्र वाद्य यंत्र के साथ गाया गया। विभाग मंत्री श्री रामसेवक द्वारा सभी अतिथियों का विस्तृत परिचय दिया गया। गोपालधाम के मंत्री श्री ओम सेठी द्वारा छात्रावास की विस्तृत जानकारी दी गई। गोपालधाम के बच्चों ने कविता, पर्यावरण पर नाटक, भगवान शिव पर नृत्य कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री नीरज गुप्ता ने बच्चों के जीवन में अनुशासन के महत्व एवं पर्यावरण के संरक्षण से संबंधित बात रखी। मुख्य वक्ता श्री शुकदेव ने सेवा के महत्व को विस्तार से बताया। विशिष्ट अतिथि श्री राज जैन ने बच्चों की प्रस्तुतियों

से प्रभावित होकर गोपालधाम को तन,मन,धन से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रमेश पंवार द्वारा छात्रावास को आर्थिक सहयोग करते हुए इस कार्य को अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया गया।

धन्यवाद ज्ञापन विभाग के उपाध्यक्ष श्री श्याम गुप्ता द्वारा दिया गया। प्रांत छात्रावास प्रमुख श्री इंद्रनील, सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय सुभाष नगर से मोनिका जी, अदिति कॉलेज से प्रोफेसर संध्या वात्सायन जी आदि उपस्थित रहे। ❐

नि:शुल्क कानूनी सलाह

गत 7 दिसंबर को सेवा भारती, पूर्वी विभाग, शाहदरा जिले के आम्बेडकर केंद्र कड़कड़डूमा एवं शहीद भगत सिंह केंद्र भीकम सिंह में न्याय केन्द्र के नाम से क़ानूनी सलाह देने का कार्य शुरू हुआ। इसमें अधिवक्ताओं ने नि:शुल्क क़ानूनी सलाह दी। कड़कड़डूमा कोर्ट के एडवोकेट अरुण जी, वरूण जी व राकेश धवन जी उपस्थित रहे। इन्होंने लोगों को क़ानूनी सलाह व बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर जिला पालक श्री शान्ति लाल, कार्यकर्ता विनीता जी व नीलम जी की उपस्थिति रही। ❐

यूनिफॉर्म का वितरण

23 दिसंबर, 2025 को गांधी नगर जिले के चित्र विहार केंद्र पर बलवाड़ी के बच्चों को यूनिफॉर्म का वितरण हुआ। इसमें जिला अध्यक्ष विजय जी, जिला मंत्री पंकज जी, महिला समिति अध्यक्ष सविता जी, मंत्री निर्मल जैन जी, सील ढींगरा जी शिक्षिका एवं निरीक्षिका आदि बहनें उपस्थित रहीं। ❐

रोहिणी में टीबी जांच शिविर

प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत चौधरी देशराज चेस्ट क्लिनिक सेक्टर 7 रोहिणी के सहयोग से दिनांक 10 दिसंबर को श्री विष्णु बाल निकेतन जेजे कैंप हैदरपुर में सेवा बस्ती के लोगों के लिए टीबी जांच शिविर आयोजित हुआ। इसमें 180 लोगों की जांच की गई। एक्स-रे, सी-वाई टीबी जैसी जांचें की गईं। सेवा बस्ती के सभी प्रधान, आशा बहन ने इस शिविर को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। ❐

शकूरपुर में सेवा शिविर

राजीव गांधी कैंसर अस्पताल के डॉ. बृजेश के साथ सेवा भारती, सरस्वती विहार ज़िला के सहयोग से सीता देवी ई ब्लॉक, शकूरपुर सेवा भारती केंद्र में निःशुल्क स्वास्थ्य एवं कैंसर जाँच शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन 11 दिसंबर, 2025 को हुआ। शिविर में मुफ़्त ओरल कैंसर स्क्रीनिंग के साथ-साथ निःशुल्क बीपी, शुगर, रक्त जांच तथा नेत्र परीक्षण की सुविधा प्रदान की गई। 100 से अधिक लोगों ने इस शिविर का लाभ उठाया। निःशुल्क चश्मों का भी वितरण किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में केंद्र पालिका प्रतिभा जी, नीलू जी, रेनू जी, प्रिया जी, पूनम जी और खुशी जी का विशेष योगदान रहा। इस महत्वपूर्ण शिविर का आयोजन सेवा भारती ज़िला अध्यक्ष श्री प्रमोद एवं श्री अनुज जी के प्रयासों से हुआ। ❐

गोपालधाम छात्रावास के बच्चों को ट्रैकसूट

गत 15 दिसंबर, 2025 को सरस्वती विहार जिले के आनन्दवास नगर (राजधानी एनक्लेव) के डॉ. सतीशचंद्रा ने गोपालधाम छात्रावास के बच्चों को ट्रैकसूट दिए। डॉ. सतीशचंद्रा ने बच्चों से बातचीत की एवं प्रेरणादायक गीत गाया। इस अवसर पर पंजाब से आए श्री सुरेंद्र गोयल एवं उनके बेटे एडवोकेट श्री नितिन गोयल जी भी उपस्थित रहे। ये दोनों गोपालधाम छात्रावास के दानदाता हैं। गोपालधाम छात्रावास के मंत्री श्री ओम सेठी, विभाग कोषाध्यक्ष श्री धीरेन्द्र, सरस्वती विहार जिले से माननीय अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल, माननीय उपाध्यक्ष श्री विनोद जैन भी उपस्थित रहे। ❐

नि:शुल्क स्वास्थ्य एवं कैंसर जाँच शिविर

मंगलवार 16 दिसंबर, 2025 को सेवा भारती, सरस्वती विहार जिला और आरजीसीआईआरसी, रोहिणी के संयुक्त तत्वावधान में सेवा भारती श्रीमती पुष्पा देवी केंद्र, के-ब्लॉक, आनंदवास नगर, शकूरपुर में एक नि:शुल्क स्वास्थ्य एवं कैंसर जाँच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के अंतर्गत नि:शुल्क ओरल कैंसर, गायनेकोलॉजिकल कैंसर, रक्तचाप, रैंडम ब्लड शुगर, दंत परीक्षण, नेत्र परीक्षण तथा रक्त जाँच की सुविधाएँ प्रदान की गई। इस शिविर से 150 से अधिक लोगों ने लाभ प्राप्त किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में केंद्र की शिक्षिकाओं एवं पालिकाओं- सीमा जी, सुनीता जी, सपना जी, अनुसाया जी तथा अंजलि जी का विशेष सहयोग रहा। ❐

शिक्षिका अभ्यास वर्ग संपन्न

सेवा भारती उत्तरी विभाग ने 13 दिसंबर, 2025 को शिक्षिका अभ्यास वर्ग आयोजित किया। इसमें दिशा बोध पुस्तिका पर श्रीमती प्रीति जी ने विस्तार में शिक्षिकाओं से बातचीत की। सभी केंद्रों पर सेवित जनों का रिकॉर्ड किस तरीके से संभाल कर रखना, कौन-कौन से रजिस्टर लगाना और केंद्र पर संख्या कैसे बड़े इस विषय को श्री सुदीप गर्ग ने लिया। स्वावलंबन का विषय श्री निर्भय, किशोरी विकास का विषय श्रीमती शकुंतला, बाल दिशा पुस्तिका का विषय श्रीमती नीता तोमर ने लिया। विस्तृत गृह संपर्क का विषय विभाग प्रचारक श्री अनिल ने लिया। संघ के शताब्दी वर्ष का विषय प्रांत मंत्री श्री दिनेश जी ने लिया। ❐

संतोष गुप्ता का निधन

सेवा भारती, पूर्वी विभाग की वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमती संतोष गुप्ता का 7 नवंबर, 2025 को निधन हो गया। उनका जन्म 25 दिसम्बर, 1950 को हरियाणा के बेरी गांव में हुआ था। इनका परिवार दिल्ली आकर कमला नगर में रहने लगा। दिल्ली में 1975 में इनका विवाह श्री आनन्द प्रकाश जी से हुआ। प्रभु ने उन्हें दो बालकों का आशीर्वाद दिया। पति की असामयिक मृत्यु (24 जून, 1990) के पश्चात् तो मानो इन पर दु:खों का पहाड़ ही टूट पड़ा। उन्हीं दिनों एक रिश्तेदार के सुझाव पर इन्होंने भारत गैस की एजेंसी के लिए आवेदन किया। 1986 में अथक परिश्रम के उपरांत ही एजेंसी को पाया। उन्होंने कड़ी मेहनत की और जीवन को पटरी पर लाया। हंसमुख,मिलनसार,मधुर आवाज की धनी और अपनी वाक्पटुता से वह हर किसी को अपना बना लेती थीं। उन्होंने सेवा भारती के अलावा अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा, आरोग्य पीठ, अग्रवाल सभा, आदि शंकराचार्य ट्रस्ट, राष्ट्रीय सेविका समिति जैसे संगठनों में भी सक्रिय थीं। उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि। ❐

छात्रावास के बच्चों के साथ मनाया जन्मदिन

गत 4 दिसंबर को शाहदरा जिले में उपाध्यक्ष मधुर बंसल जी के माध्यम से 'इनर व्हील क्लब विवेक' की सदस्या श्रीमती श्वेता जी ने अपने बेटे का जन्मदिन चंद्र नगर छात्रावास के बच्चों के साथ मनाया। बच्चों को पेस्ट्रीज, स्नैक्स, पेन दिए गए व कुछ राशि छात्रावास में भेंट की गई। 'इनर व्हील क्लब विवेक' को शाहदरा जिला की ओर से साधुवाद। ❐

छात्रावास में बांटी गईं टोपियां

गत 22 दिसंबर,2025 को सेवा भारती, शाहदरा जिले की उपाध्यक्ष मधुर बंसल जी और इनर व्हील क्लब, दिल्ली विवेक की ओर से विवेकानंद धाम छात्रावास के सभी बच्चों को ऊन की टोपियां बांटी गईं। इसके अतिरिक्त विज्ञान विहार निवासियों से एकत्रित खाद्य सामग्री छात्रावास में पहुंचाई गई। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट में सत्यनारायण जी की कथा

प्रत्येक माह की भांति पूर्णमासी 4 दिसंबर, 2025, दिन गुरुवार को सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट में सत्यनारायण जी की कथा की गई। पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन श्रीमती एवं श्री जोगेन्दर सलोटा जी, सुषमा गुप्ता एवं सभी शिक्षकों द्वारा किया गया। इसके पश्चात श्रीमती मोहिनी जी के द्वारा सत्यनारायण जी की कथा की गई। सत्यनारायण जी की आरती के बाद महिलाओ द्वारा भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। प्रसाद के रूप में कसार और पंचामृत एवं केले दिए गए। कुल संख्या 60 की थी। इस कार्यक्रम के निमित्त श्री सलोटा जी के द्वारा 5100ध- का चेक दिया गया। ❒

सेवाधाम में छात्रावास कार्यशाला

गत 7 दिसंबर, 2025 को सेवा भारती प्रांत दिल्ली द्वारा सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय मंडोली नन्द नगरी दिल्ली 93 में एक दिवसीय छात्रावास कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में सेवा भारती दिल्ली द्वारा संचालित छात्रावास सेवा भारती सेवा सौरभ, गोपालधाम, विवेकानंद, प्रकाशानंद, अपराजिता, माता जीवनी बाई, केशव छात्र निकेतन के छात्रों साथ छात्रावास अधीक्षकध अधीक्षिका, संचालन टोली ने भाग लिया। कुल 43 लोग थे। 7 महिला कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

कार्यशाला प्रातः 8:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक चली। प्रथम सत्र में सेवा भारती, दिल्ली प्रांत प्रशिक्षण प्रमुख श्री संजय गर्ग ने छात्रावास प्रबंधन और अनुशासन, द्वितीय सत्र में सेवा भारती दिल्ली के महामंत्री श्री सुशील गुप्ता ने प्रशासनिक तकनीकी कौशल, सेवा भारती अखिल भारतीय छात्रावास टोली की सदस्या एवं उत्तर क्षेत्र छात्रावास टोली संयोजिका श्रीमती अर्पणा ने अधीक्षक विकास, तृतीय सत्र में सेवा भारती दिल्ली प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री श्री शुकदेव ने अभिभावक के साथ संपर्क और सहभागिता पर बात रखी।

चतुर्थ एवं समापन सत्र में राष्ट्रीय सेवा भारती छात्रावास प्रमुख श्री जयदेव दादा जी ने अनुभव कथन एवं समाज से जुड़ाव विषय के अंतर्गत सनातन दर्शन, पंच परिवर्तन, दूसरे छात्रावास में प्रवास विषय पर अपने विचार रखे। कार्यशाला का शुभारंभ गायत्री मंत्र और समापन कल्याण मंत्र से हुआ। वर्ग में मुख्य रूप से सेवा भारती दिल्ली प्रांत छात्रावास प्रमुख श्री इंद्र नील, सेवाधाम के प्रबंधक श्री ओंकार नाथ मिश्रा, सहप्रबंधक डॉ एसण्पीण सिंह, सह प्रबंधिका श्रीमती रेखा गर्ग, प्रधानाचार्य श्री विमल कुमार सिंह, छात्रावास प्रभारी श्री अनिल कुमार पाण्डेय एवं सेवा भारती दिल्ली प्रांत के सभी छात्रावास अधीक्षकध अधीक्षिका एवं संचालन टोली के सदस्य की उपस्थिति रही। ❒

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 जनवरी, 2026, प्रकाशन तिथि-6-7 जनवरी, 2026
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27

साप्ताहिक प्रकल्प स्वास्थ्य शिक्षा का शुभारम्भ

दक्षिणी विभाग, बदरपुर जिले के स्वामी विवेकानन्द केंद्र लाल कुआं में स्वास्थ्य को लेकर महिलाओं के लिये एक नया साप्ताहिक प्रकल्प स्वास्थ्य शिक्षा का शुभारम्भ बदरपुर जिले की महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती सरोज चौधरी और निरीक्षिका श्रीमती रजनी श्रीवास्तव के प्रयासों से किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं और किशोरियों को होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर जागरूक करने का प्रयास किया गया। जिला महिला समिति अध्यक्ष सरोज चौधरी जी ने बहुत ही सुन्दर और सरल शब्दों में विषय को रखा, कार्यक्रम में महिलाओं और किशोरियों की संख्या लगभग 40 की रही।

विज्ञापन और लेख के लिए आग्रह

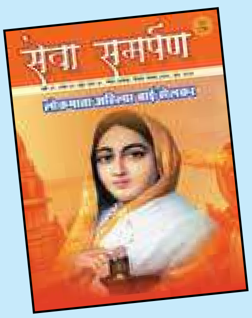

सेवा समर्पण

प्रिय पाठको,
सेवा समर्पण में सुधार के लिए अपने अमूल्य सुझाव हमें भेज सकते हैं। इसकी सदस्यता लेने के साथ ही आप अपनी रचनाएं (लेख/कहानी/कविता) भी निम्न पते पर भेज सकते हैं-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
फोन-011-23345014-23345015

सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार है :-
वार्षिक 200/- एवं आजीवन 1500/

नीचे वर्णित एकाउन्ट न. में आप शुल्क जमा करा सकते हैं।
Account Name- Sewa Prakashan
Account No. - 902320100-24024
IFCS No. - CNRB 0019023

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।